प्रथम अध्याय

सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्य

(क) धर्म और साधना का स्वरूप

तप, शौच, दया और सत्य आदि धर्म के चार अंग कहे गए हैं। गीता में कहा गया है, ''मैं तप, शौच, दया तथा सत्य इन चार पैरों वाले वृष का रूप धारण करने वाला धर्म हूँ।''[1] अतः धर्म मनुष्य को कर्त्तव्यों, सत्कर्मों एवं गुणों की ओर ले जाता है। वह व्यक्ति की अनेक रुचियों, इच्छाओं, आकांक्षाओं, आवश्यकताओं आदि के बीच एक सन्तुलन बनाये रखता है। श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार सम्पूर्ण भूतों के कल्याण के लिए ही धर्म की स्थापना हुई है– ''प्रभवार्थ च भूतानां धर्म प्रवचनम् कृतम''। मनु के अनुसार जो व्यक्ति धर्म का सम्मान करता है, धर्म उस व्यक्ति की सदैव रक्षा करता है। शास्त्रकारों का यह भी विचार है कि मनुष्य का शरीर नष्ट होते ही सभी कुछ छूट जाता है किन्तु धर्म तब भी उसके साथ रहता है।''[2]

धर्म को साक्षात् ईश्वर के स्वरूप के रूप में स्वीकार किया गया है। ईश्वर ही धर्म की स्थापना करता है, संचालन तथा रक्षा करता है। धर्म का पालन समय और परिस्थितियों के अनुसार होता है। अन्यत्र जीवात्मा का गुण, क्रिया, स्वभाव भी धर्म के प्रतिरूप है। धर्म जीवात्मा के अन्तःकरण का विषय है और इसका क्षेत्रीय विस्तार व्यक्ति के अन्तःकरण, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार को परिमार्जित कर शुचिता प्रदान करता है ताकि साधक, साधना के पथ पर अग्रसर हो सके। साध्य अर्थात् लक्ष्य की प्राप्ति के लिए किया जाने वाला अनुष्ठान ही साधना है। पतंजलि योग सूत्र में अष्टांग योग के माध्यम से साधक को यम, नियम, आसन,

---

1 डॉ0 शिवभानु सिंह, समाज दर्शन का परिचय, पृ0 349

2 वही

प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान एवं समाधि को प्राप्त कर साधना को फलीभूत करते हैं। मन का शमन एवं इन्द्रियों का दमन भी साधक के लिए आवश्यक है। कहा भी गया है कि 'मन के हारे हार है, मन के जीते जीत'। इसी बात का शास्त्रों में अलग–अलग तरह से उल्लेख है– यथा 'मन एव मनुष्याणां कारणं बंध मोक्षयो' अर्थात् मन ही साधक मनुष्य के बंधन और मोक्ष का कारण हैं। इस तरह धर्म के पुष्ट धरातल पर खड़े होकर साधक, साधना की ऊँचाइयों के साध्य को प्राप्त करने की चेष्टा करते हैं।

¼i½ ब्रह्म के तात्त्विक स्वरूप का अवलोकन

ब्रह्म अनिर्वचनीय एवं अपरिभाषेय है। ब्रह्म का यथार्थ स्वरूप वाह्य दृष्टि से गम्य नहीं है। 'परम सत्य या परम तत्त्व भारतीय दर्शन में एकमात्र ब्रह्म या आत्मा को ही माना गया है'।[1]

उपनिषदों के अनुसार ब्रह्म ही परम सत् है, उसे सत्य, ज्ञान, अनन्त स्वरूप बतलाया गया है। ब्रह्म सत् सर्वव्यापी, शुद्ध चैतन्य रूप, अनन्त और अन्तर्यामी है। ब्रह्म ही जगत् की उत्पत्ति, स्थिति और संहार का कारण है। ब्रह्म ही विश्व का अव्याकृत रूप है। सम्पूर्ण प्रकृति ईश्वर (ब्रह्म) की सृष्टि है, ईश्वर जन्य है, ईश्वर प्रेरित है। ईश्वर ही इसका सूत्रधार है। 'सत्यं ज्ञानं अनन्तं ब्रह्म' अर्थात् सत्य तात्त्विक ज्ञान एवं चिरन्तनता ब्रह्मानुभूति के लक्षण है। लोकोत्तरता से प्राप्त परम आनन्द की अवस्था भी ब्रह्मानुभूति है। साधक का आत्म–साक्षात्कार प्राप्त कर लेना भी ब्रह्मानुभूति है। इस अवस्था में साधक मन एवं इन्द्रियों के धरातल पर उद्भूत सुख और दुख के परे हो जाता है, यह भी ब्रह्मानुभूति का एक सोपान है। अपने को सबमें, तथा सबको अपने में समझना भी आत्म–विस्तार की अवस्था है। ब्रह्म के तात्त्विक स्वरूप को समझने के लिए गीता का निम्न श्लोक दृष्टव्य है–

---

1 डॉ0 बी0एन0 सिंह, भारतीय दर्शन, पृष्ठ–1

^^fo|kfou; lEiUus czkã.ks xfo gfLrfuA
'kqfu pSo Üokikds p if.Mrk% lenf'kZu%**AA[1]

अर्थात् विद्या से मण्डित अत्यन्त विनीत ब्राह्मण में, गाय और हाथी में, कुत्ते और चाण्डाल में जो समदर्शी है वह पण्डित अर्थात् तत्वज्ञ है।

ब्रह्म के तात्विक स्वरूप को प्राप्त साधक एक शिशु की तरह निर्मल मन हो जाता है। उसके कार्यकलाप साधारण संसारी व्यक्ति की दृष्टि में पागलपन के होते हैं। वह संसार के लिए बनाए गए नियम–संयम आदि से ऊपर उठकर एक पिशाच की तरह आचरण करता हुआ प्रतीत होने लगता है। इस तरह ब्रह्मानुभूति एक परम विलक्षण अवस्था है। उसके लिए संसार का कोई आकर्षण अर्थहीन होता है एवं बड़ी से बड़ी उपलब्धि उसके लिए हस्तामलक होती है।

ब्रह्म ही एकान्त सत्य है– ब्रह्म के अतिरिक्त किसी की सत्ता नहीं। ब्रह्म ही सर्वशक्तिमान है। ब्रह्म सभी भौतिक और मानसिक शक्तियों का अधिष्ठान है। यह ब्रह्म की शक्ति है जो हमारी आत्म चेतना और कल्पना के रूप में अपने को व्यक्त करती है तथा हमें कल्पना करने में समर्थ बनाती है। ब्रह्म की ज्योति से ही सूर्य और चन्द्रमा, नक्षत्र और विद्युत प्रकाशित होते हैं, अपनी ज्योति से नहीं। ब्रह्म के आदेश ही सूर्य एवं चन्द्रमा अपने स्थान पर स्थिर रहते हैं। ब्रह्म के ही आदेश से पृथ्वी एवं आकाश अपने पृथक–पृथक स्थान पर स्थित हैं और इसी के आदेश से निमेष, मुहूर्त, रात–दिन, पक्ष, मास, ऋतु और वर्ष, विश्व की व्यवस्था में अपने निश्चित धर्म का पालन करते हैं। संक्षेप में, ब्रह्म से ही जगत की उत्पत्ति, उसी में स्थिति और उसी में लय है। 'केन उपनिषद्' में बतलाया गया है कि सभी सांसारिक शक्तियाँ ब्रह्म की आंशिक अभिव्यक्ति हैं।[2] ब्रह्म सभी भौतिक और

---

1 गीता, अध्याय–5, श्लोक–18

2 केन उपनिषद्, अध्याय–3, श्लोक–4

मानसिक शक्तियों का एकमात्र अधिष्ठान है। यह ब्रह्म की शक्ति है जो विद्युत में पल भर प्रदीप्त होकर पुनः विलीन हो जाती है। ब्रह्म की शक्ति के कारण ही देवता विजयी होते हैं।[1]

इस प्रकार ब्रह्म को सत्य, ज्ञान अनन्तरूप कहा गया है। अविनाशी होने से वह सत् और नित्य है, चैतन्यमात्र होने के कारण उसे चित् कहा गया है। देश, काल और वस्तु से अपरिच्छिन्न होने के कारण ब्रह्म को अनन्त कहा गया है। ब्रह्म निराकार, निर्विषय तथा अप्रमेय है। यही ब्रह्म का स्वरूप है।

(ii) *योग समन्वय*

आत्मा और परमात्मा के सम्बन्ध, जीव और शिव के समन्वय का सिद्धान्त ही योग कहलाता है। योग शब्द सम्बन्धवाचक है। जीव और ईश्वर में सम्बन्ध में तीन साधन बतलाए गए हैं– कर्म, भक्ति और ज्ञान। इन तीनों योगों का विपुल वर्णन एवं निरूपण गीता शास्त्र में कई धरातलों पर किया गया है। गीता में योग शब्द सम्बन्ध वाचक है। युज् धातु से योग शब्द बनता है। जिसका अर्थ मिलना या सम्बन्ध स्थापित करना है। गीता का यह योग पातंजल योग से भिन्न है। पातंजल योग में योग शब्द समाधिवाचक (युज् समाधौ) है। समाधि चित्तवृत्तियों के निरोध से ही सम्भव है। अतः पातंजल योग में चित्तवृत्ति निरोध को ही योग माना गया है। इस प्रकार गीता का योग पातंजल योग से भिन्न है। गीता में योग समाधि नहीं, वरन् सोपान है; साध्य नहीं, वरन् साधन है; लक्ष्य नहीं, वरन् मार्ग है। तात्पर्य यह है कि कर्म, ज्ञान, भक्ति इन तीन मार्गों से ही ईश्वर की प्राप्ति

---

1 एक बार देवताओं और राक्षसों में घोर युद्ध हुआ, देवता विजयी हुए। देवताओं को ऐसा लगा कि यह विजय उन्हीं की शक्ति के कारण हुई। सभी देवता ब्रह्म के पास गए और अपनी–अपनी शक्ति का परिचय दिया। अग्निदेव ने कहा मैं जात वेदस हूँ जिसमें विश्व को जलाने की शक्ति है। ब्रह्म ने उनसे एक दूर्वादल जलाने को कहा जिसे वे न जला पाये। पुनः वायु ने कहा कि मैं मातरश्विन हूँ जिसमें विश्व के प्रत्येक वस्तु को उड़ाने की शक्ति है। ब्रह्म ने उनसे दूर्वादल उड़ाने को कहा जिसे वे तिल भर भी न उड़ा पाये। अन्त में यह निर्णय हुआ कि ब्रह्म की शक्ति के कारण ही देवता विजयी हुए।
– उद्धृत भारतीय दर्शन (डॉ0 बी0एन0 सिंह) पृ0 56

सम्भव है। आत्मा और परमात्मा में मिलन के तीन मार्ग हैं। जीव और शिव में सम्बन्ध के लिए तीन सोपान हैं। तीनों समानतः महत्वपूर्ण हैं। तीनों का फल समान है– ब्रह्म प्राप्ति या ईश्वर से मिलन। इनमें से किसी एक को कम या अधिक महत्वपूर्ण नहीं कहा जा सकता। सभी मार्ग समान हैं, जिसे जो मार्ग अच्छा लगे या जिसकी स्वाभाविक रुचि जिस मार्ग में हो। जो ज्ञान प्रधान व्यक्ति (ज्ञानी) है। उसे ज्ञान–मार्ग (योग) का अनुसरण करना चाहिए, जो कर्मप्रधान व्यक्ति है, उसे कर्म–मार्ग (योग) पर चलना चाहिए तथा जो भक्तिप्रधान (भक्त) है उसे भक्तिपथ (योग) की शरण लेनी चाहिए। अतः तीनों समान–मार्ग हैं।

भक्ति, ज्ञान और कर्म की त्रिवेणी से हम एक ही विराम–स्थान पर पहुँचते हैं। ईश्वर प्राप्ति भक्ति, ज्ञान और कर्म तीनों से हो सकती है। कर्मफल से अनासक्त होकर निष्काम भाव से तथा कर्त्तव्य–परायण होकर कार्य करना योग है। इस सन्दर्भ में गीता का निम्न श्लोक दृष्टव्य है–

^^;kxLFk% d# deki.k l³xa R;DRok /kuUt ;A
fl);fl);k% leks HkRok leRoa ;kx mP;rAA**[1]

अर्थात् हे धनंजय आसक्ति का परित्याग करके अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियों में समान भाव रखते हुए कर्म कर, क्योंकि समत्व भाव ही योग कहा गया है।

भक्ति, ज्ञान और कर्म तीनों भगवान के द्वार बतलाए गए मार्ग हैं। तीनों समान हैं। एक स्वाभाविक प्रश्न यह होता है कि यदि साध्य एक है तो तीन विभिन्न साधनों के कल्पना की आवश्यकता क्या है? इसका उत्तर यह है कि सभी मनुष्य समान नहीं होते, सभी की प्रकृति एक सी नहीं होती। मनुष्य का शरीर तो त्रिगुणात्मक है अर्थात् सत्व, रज और तम के सम्मिश्रण से बना हुआ है।

1 गीता, अध्याय–2, श्लोक–48

परन्तु किसी में सत्व गुण की प्रधानता है, किसी में रजोगुण की और किसी में तमोगुण की। इसी प्रकार मनुष्य की प्रकृति में भेद उत्पन्न होता है। इसी प्रकार कोई व्यक्ति स्वभावतः निवृत्ति मार्ग को चाहता है तो कोई व्यक्ति प्रवृत्ति मार्ग को। किसी को कर्म करने में सुख मिलता है तो किसी को कर्म छोड़ने में ही सुख मिलता है और किसी को भक्ति में ही महान आनन्द प्राप्त होता है। अतः तीनों मार्ग योगियों की रुचि के अनुकूल है।

भगवान ने स्वयं तीनों योगों का समन्वय किया है। तीनों योगों का समन्वय करते हुए भगवान कहते हैं–

^^eUeuk Hko HknHkDrk e|kth ek ueLd:A
ekeo";fl ;DRoloekReku eRijk;.k%**AA[1]

अर्थात् भगवान कहते हैं कि हे अर्जुन! तुम अपना मन तद्रूप कर लो अर्थात् मुझमें मन वाला हो, मेरा भक्त बन अर्थात् मेरे प्रेम के रंग में रंग जाओ, सब स्थान पर मेरा अस्तित्व समझकर मेरी वन्दना करो। केवल मेरी ही ओर लक्ष्य रखकर सभी संकल्पों का अन्त कर डालना ही मानो मेरी पूजा है। इस प्रकार जब तुम मेरे ध्यान से सम्पन्न हो जाओगे तभी तुम मेरा स्वरूप प्राप्त कर सकोगे।

इस उपदेश में भगवान ने भक्ति, ज्ञान और कर्म तीनों का समन्वय किया है। कर्मयोगी मन और इन्द्रियों से प्रेरित होकर अनुकूल परिणामों के लिए कर्म न करके आत्मस्थ भाव में रहकर आत्मा के लिए ही कर्म करता है। यही कर्म योग का सिद्धान्त है।

भगवान ने एक और स्थल पर ज्ञान योग अथवा सन्यास योग को ही सर्वोपरि माना है। इसलिए भगवान कहते हैं– हे अर्जुन! तू योगी हो जा (तस्मात् योगी भव अर्जुनः)। ज्ञान योग को गीता में सांख्य योग एवं सन्यास योग भी कहा

---

1 गीता, अध्याय–9, श्लोक–34

गया है। भगवान ने गीता में सांख्य योग भी कहा गया है। भगवान ने गीता में सांख्य योग और कर्म योग को एक ही सिक्के के दो पहलू माना है यथा–

^^lk[;;ksxkS i`FkXckyk% izonfUr u if.Mrk%
,deI;kfLFkr% lE;xHk;kfoZUnrs QyeA**[1]

अर्थात् सन्यास और कर्मयोग को मूर्ख लोग पृथक–पृथक फल देने वाले कहते हैं, न कि पण्डित जन, क्योंकि दोनों में से एक में भी सम्यक् प्रकार से स्थित पुरुष दोनों के फलस्वरूप परमात्मा को प्राप्त होता है।

गीता में भगवान ने भक्ति योग का भी उल्लेख किया है। जिसमें भगवान ने अर्जुन को उपदेश दिया है कि मेरा ही भजन करो, एवं मेरा ही नमन करो। मुझमें पूर्ण समर्पण ही भक्ति योग है। इसी सन्दर्भ में भगवान ने जो बात कही है वह इस श्लोक में दृष्टव्य है–

^^vuU;psrk% lrra ;ks eka Lejfr fuR;'k%A
rL;kga lqyHk% ikFkZ fuR;;qDrL; ;ksfxu%**AA[2]

एक अन्य स्थल पर यम, नियम से प्राप्त शुचिता एवं साधक के दैनिक कार्य–कलाप परिष्कृत होकर जब योग युक्त हो जाते हैं तो सभी दुःखों का नाश करने वाले योग की प्राप्ति साधक को हो जाती है, यथा–

^^;qDrkgkjfogkjL; ;qDrps"VL; deZlqA
;qDrLoIukockks/kL; ;ksxks Hkofr nq%[kgkA**[3]

अर्थात् दुःखों का नाश करने वाला योग तो यथायोग्य आहार–विहार करने वाले का, कर्मों में यथायोग्य चेष्टा करने वाले का और यथायोग्य सोने तथा जगाने वाले का ही सिद्ध होता है।

---

1 गीता, अध्याय–5, श्लोक–4
2 गीता, अध्याय–8, श्लोक–14
3 गीता, अध्याय–6, श्लोक–17

एक अन्य स्थान पर भगवान ने साधक के चित्त की साम्यावस्था को योग कहा है। अर्थात् जब चित्त में विचारों की उत्ताल–तरंगे विषम न रहकर सम हो जाती हैं तब साधक योगावस्था को प्राप्त कर लेता है। ये तीनों योग साधन या मार्ग हैं। इनके सहारे हम लक्ष्य तक पहुँच सकते हैं, तीनों में अन्तर केवल मार्ग का है। ज्ञान, कर्म और भक्ति में ऐकान्तिक भेद नहीं किया जा सकता। यह तीनों ज्ञान, कर्म और भक्ति सभी एक दूसरे के पूरक हैं; यही योग समन्वय है।

¼iii½ परम्परा एवं मौलिकता

राम का पावन चरित भारतीय संस्कृति की संजीवनी होने के कारण विश्व का एक अत्यन्त लोकप्रिय आख्यान रहा है। साहित्यकारों ने समय–समय पर युग मानस को ऊर्जस्वित करने के लिए अपनी व्यक्तिगत साधना और अनुभूति के अनुसार उसे नये साँचे में ढाल कर रूपायित किया। वाल्मीकि रामायण और रामचरित मानस रामकथा के दो ऐसे आधार स्तम्भ हैं, जिन्हें अपने प्रबन्धों का आधार बनाकर अनेक कवियों ने रामकथा को नवीन दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया है। ''रामचरित में कथा के धरातल पर नवीन दृष्टि मैथिलीशरण गुप्त के 'साकेत' से आरम्भ होती है लेकिन इसके सूत्रपात का समस्त श्रेय केवल गुप्त जी को नहीं है। हमें ऐसा समझना चाहिए कि गुप्त जी के काव्य में आकर रामकथा पर नवीन चिन्तन ने सर्वथा निखरा रूप धारण कर लिया लेकिन उसके सूत्रपात का श्रेय रामचरित उपाध्याय को है। उनके 'रामचरित–चिन्तामणि' का प्रकाशन संवत् 1970 के आसपास हुआ। 'रामचरित–चिन्तामणि' ने रामकाव्य की जो परम्परा चलाई उसमें पौराणिकता और नवीन दृष्टि दोनों का सम्बन्ध है। बल्कि यों कहना चाहिए कि पौराणिकता के अस्तित्व को स्थिर रखते हुए नवीन चिन्तन की रेखाएँ खींची गयी हैं। रामचरित उपाध्याय के प्रबन्ध काव्य 'रामचरित चिन्तामणि' की यह काव्य परम्परा अभी तक चलती आ रही है। इसलिए खड़ी बोली के युग के

आरम्भ में पूर्वाग्रहगृहीत नवोन्मेषवाही रामकथा काव्यों की भी एक परम्परा है। उनका एक अलग वर्ग है।''[1]

राम को मानव–धर्म और राष्ट्र का प्रतीक मानकर रामकथा की परम्परा का परिष्कार हुआ।

¼i½ *दर्शन एवं भक्ति की दृष्टि से*

तुलसीदास के बाद का रामभक्ति का एक निश्चित और सुव्यवस्थित रूप नहीं रहा– विशिष्टाद्वैत, द्वैत, द्वैताद्वैत, अद्वैत, मधुरभाव, मानवीयता तथा राष्ट्रीयता आदि अनेक रूपों में रामभक्ति के प्रति अपने भावों का निदर्शन हिन्दी के कुशल कवि करते रहे हैं। अवतारवाद तथा राम के सगुण रूप की पूजा एवं निर्गुण रूप की विराटता इत्यादि कवियों का लक्ष्य रहा है। कवियों का झुकाव ब्रह्म (राम) पर अधिक है। रामकथा की परम्परा के प्रसंगवश उसने उनको विष्णु का अवतार, पुरुषोत्तम कहा है। सबका मूल राम को माना है। राम ही परम शक्ति और अन्तिम लक्ष्य हैं। उनको प्राप्त करना ही जीव का मूल हेतु है। राम का अवतार ही लोककल्याण के लिए हुआ है। उनका व्यक्तित्व उद्धारक व्यक्तित्व है। लेकिन दर्शन के क्षेत्र में भगवान के सगुण रूप की उपासना का जो रूप लोक के सामने आया, लोक–लीला करने वाले राम ऋषियों के आश्रमों से आगे बढ़कर राज सभाओं में राजमंदिरों में जो ऊँचे प्रतिष्ठा पाने लगे, उससे रामचरितमानस से एक विभिन्न दिशा में रामकथा के पात्र रस और भाव के आश्रम बनकर कवियों के द्वारा चित्रित किये जाने लगे। रामचरितमानस में आरम्भ से लेकर अंत तक भक्ति–भाव का जो समुद्र उमड़ा है उसका दर्शन पिछले किसी काव्य में नहीं हुआ। जीवन के नाना मनोभावों को लेकर करुण, वीर रसों की तथा स्वाभिमान–जन्य, ममता–जन्य, कर्त्तव्य–प्रेरित, कर्म–सिद्धान्त से अविभावित आत्मा का

---

1 तुलसीदासोत्तर हिन्दी राम–साहित्य, डा0 राम लखन पाण्डेय, पृ0 94–95

अमरत्व, जन्म–मृत्यु आदि दार्शनिक सिद्धान्तों–भावों से उद्वेलित जीवन की विविध अवस्थाओं की भावमयी रसमयी प्राण–प्रतिष्ठा मानस में हुई है।

राम का लीला रूप विलक्षण है। एक क्षण के लिए वह ब्रह्म हैं तो दूसरे क्षण के लिए संसार को भ्रम में डालने वाले तथा सामान्य मनुष्य की भाँति आचरण करने वाले दशरथ पुत्र श्रीराम। कबीर राम को दशरथ का पुत्र न मानकर निरंजन ब्रह्म मानते हैं– 'दशरथ सुत तिहुलोक बखाना, राम नाम कर मरम न जाना।' इसीलिए यह भ्रम बराबर उठता रहा है कि क्या राम दशरथ सुत हैं? विद्वानों के इस संदर्भ में दो संवर्ग हैं जिनमें एक वर्ग स्वीकार करता है कि राम दशरथ सुत ही है और दूसरा वर्ग इन्हें दशरथ सुत न मानकर ब्रह्म राम मानता है। इस प्रकार का संशय आज के विद्वानों में ही नहीं है, आदिकाल से ऋषियों, मुनियों, पार्वती, गरुड़, एवं त्रिकालज्ञों को भी हुआ है।

राम के इस लीला रूप का विभ्रम मानस में केवल पार्वती को ही नहीं है, राम के लीला रूप को देखकर हनुमान भी उन्हें पहचान नहीं पाते। इसे वे अपना अपराध बोध स्वीकार करते हुए श्रीराम से याचना करते हैं कि मेरा कौन–सा अपराध था, जिससे मैं अपने इष्टदेव को देखकर भी पहचान नहीं सका, प्रभु ये मेरा अपराध क्या है? और उसके बाद श्रीराम को पहचान कर वे उनके चरणों में जा गिरे–

ekj U;km e iNk lkbA re iNg dl uj dh ukbAA
ro ek;k cl fQjm Hkykuk rkr e ufg iHk ifgpkukAA[1]

हनुमान जी कहते हैं–

ukFk tho ro ek;k ekgkA lk fuLrjb rEgkjfg NkgkAA[2]

---

1 रामचरितमानस, किष्किंधाकाण्ड, दो0 2, चौ0 8–9
2 वही, दोहा 3, चौपाई 2

लीला के साथ सबसे बड़ी समस्या भ्रम की है, ब्रह्म विशिष्ट है और लोक में वह सामान्य मनुष्य की भाँति आचरण करके क्या समाज को भ्रमित करता है? लीला की मूल अवधारणा बताती है कि लीला भ्रम उत्पन्न करने के लिए नहीं, यह भ्रम की मुक्ति का कारण हैं, जो भ्रमित हैं पार्वती की भाँति उन्हें भी पूरी कथा जानकर परम आनन्द होता है। श्रीराम के लीला रहस्य को सुनकर पार्वती शिव से कहती हैं–

lfu lc dFkk ân; vfr HkkbA fxfjtk ckyh fxjk lgkbAA
ukFk d'ik ee xr lngkA jke pju mitm uo ugkAA
e d'rdR; Hk;m vc ro ilkn fo'o lA
mith jke Hkxfr n< chr ldy dy lAA[1]

शिव पार्वती को केवल लीला कथा सुनाते हैं, और इस कथा को सुनकर उनका सम्पूर्ण भ्रम भाग जाता है और राम के लीला के रूप को ही वे ब्रह्म रूप समझने लगती है। अतः मानस की सम्पूर्ण कथा ब्रह्म के सगुण रूप की कथा है। डॉ0 राम प्रसाद मिश्र ने बहुत ठीक कहा है कि ''रामचरितमानस समन्वयववाद का एक सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ है, दृष्टा महर्षि तुलसीदास ने अपने समय तक की समग्र भारतीय संस्कृति को एकरस–एकरूप कर दिया है। निर्गुण–निराकार और सगुण–साकार, सर्ववाद और एकेश्वरवाद, एकेश्वरवाद और बहुदेववाद, अद्वैतवाद और द्वैतवाद, विशिष्टाद्वैत और द्वैताद्वैतवाद, सब कुछ मानस में समाकर एक बन गया है। इसी कारण उनकी भक्ति एक पूर्ण जीवन–दर्शन बन गई है।''[2]

महाकवि केशव की दृष्टि में राम

केशवदास ने राम के चरित्र में एक मानव के पूर्ण रूप को प्रकट करने की चेष्टा की है। यहाँ राम का चरित्र मानवीय आदर्शों का प्रतीक बन गया है। मानस

---

1 रामचरितमानस, उत्तरकाण्ड, दोहा 129, चौपाई 7–8

2 विश्व कवि तुलसी और उनके प्रमुख ग्रन्थ, डा0 राम प्रसाद मिश्र, पृ0 46,

के राम के समान रामचन्द्रिका के राम का चरित्र शक्ति, शील और सौन्दर्य से मण्डित है। रामचन्द्रिका में राम के चरित्र का विचार करते हुए यह स्पष्ट अनुभव होता है कि कवि ने रामकथा के लिए वाल्मीकि रामायण, आध्यात्म रामायण, हनुमन्नाटक, प्रसन्नराघवम् आदि संस्कृत काव्यों से प्रेरणा प्राप्त की है। केशव की रुचि वाल्मीकि रामायण के पुरुषोत्तम राम की झांकी प्रस्तुत करने में अधिक रही है। उनके राम आदर्श की अपेक्षा यथार्थ के अधिक निकट है। केशव के राम ब्रह्म होते हुए भी मानवीय गुणों और दुर्बलताओं के कारण अनुकरणीय है, संसार के बीच रहकर जीवन को ऊँचा उठाने की प्रेरणा देता है वे मनुष्य में ही ईश्वरत्व की झाँकी प्रस्तुत करते हैं।

मैथिलीशरण गुप्त की दृष्टि में राम

गुप्त जी राम को आराध्य मानते हैं, तुलसी की भाँति गुप्त जी के राम भी निर्गुण से सगुण रूप में प्रकट हो गए हैं उनके अवतरण का उद्देश्य पापियों का संहार है–

^^gks x;k fuxqZ.k lxq.k&lkdkj gS]
ys fy;k vf[kys’k us vorkj gSA
ikfi;ksa dk tku yks vc vUr gS]
Hkwfe ij izdVk vukfn&vUr gSA**[1]

इस प्रकार गुप्त जी के राम आदर्श की प्रतिमूर्ति हैं। साक्षात् ब्रह्म होते हुए भी मानव हैं। साहित्य मंजूषा में राम के उदात्त चरित्र का विधिवत संचयन प्राप्त होता है। राम का उदात्त चरित्र जन–जन का प्रेरणास्रोत रहा है, यही कारण है कि आदिकाल से लेकर अद्यावधि ''राम'' के विविध रूपों की अभ्यर्चना साहित्य का प्रिय विषय रहा है। उत्तर भारत में राम भक्ति के प्रवर्तन का प्रमुख श्रेय रामानन्द को प्राप्त है। रामकाव्य परम्परा के अन्तर्गत ''राम रक्षा स्रोत'' उनकी प्रमुख रचना हैं रामावत सम्प्रदाय के प्रवर्तक स्वामी रामानन्द ने भक्ति के क्षेत्र में

---

1 साकेत सर्ग 1, मैथिलीशरण गुप्त, पृ0 1

अनेक क्रान्तिकारी परिवर्तन किए और राम की मर्यादा भक्ति को आदर्श और आचरण की पवित्रता से मण्डित रखते हुए जन साधारण के लिए सुगम बनाया। यहाँ कवि गोस्वामी तुलसीदास की भक्ति–भावना, कबीर आदि भक्तों की ज्ञान योगमयी भावना की भाँति रहस्यमयी नहीं है।

'वाल्मीकि रामायण' और 'मानस' दोनों में राम और देवताओं से भी अधिक श्रेष्ठ दिखलाए गए हैं। 'मानस' में राम को ब्रह्मा, विष्णु और महेश आदि मुख्य देवताओं से भी ऊँचा कहा गया हैं। 'वाल्मीकि रामायण' में उनकी तुलना विष्णु, इन्द्र और वरुण से की गई है। राम का यही महान रूप मनुष्य और देवताओं की सीमा से अतीत रूप उनमें परब्रह्म की कल्पना करने का आधार बन गया है।

राम काव्य के विविध रूपों में रचना निरत कवियों के लिए राम का चरित्र गायन उनके कविरूप को कृतार्थ करने में सहयोगी रहा है। ''राम के जीवन ने एक व्यापकता ग्रहण की। आरम्भ में सामाजिक, पारिवारिक और राजनीतिक परिवेश में बँधी कहानी क्रमशः भक्ति भावना से अनुप्रेरित होकर अवतारवाद में परिणत हो गई, जिसका पूर्ण परिपाक तुलसीदास के 'रामचरितमानस' में हुआ और उसके बाद धीरे–धीरे यह कथा दार्शनिक सिद्धान्तों का आधार बनती गई, जिसके फलस्वरूप रामानन्दी एवं रसिक संप्रदायों की उपासना का आविर्भाव हुआ।''[1] अपने पाप का नाश और परमपद की प्राप्ति रचनाकार की भक्ति का उद्‌देश्य रहा है। राम भक्ति का लोक में जो व्यापक प्रभाव पड़ा उसने राम–साहित्य रचना का एक आन्दोलन सा खड़ा कर दिया। राजा से लेकर रंक तक राम साहित्य पर कुछ न कुछ अवश्य लिखते थे। उनके अंदर कुछ लिखने की क्षमता रहती थी। रींवा नरेश रघुराज सिंह का 'राम स्वयंवर' तथा मांडा नरेश रुद्रप्रताप सिंह का 'रामखण्ड' जैसे रामचरित पर विशाल काव्य इस बात के साक्षी

---

1 तुलसीदासोत्तर हिन्दी राम साहित्य, डा0 राम लखन पाण्डेय, पृ0 15

हैं कि इन्होंने रामचरित पर रचना करने को अपना कर्त्तव्य समझा। धीरे–धीरे रामभक्ति के अधिकाधिक प्रचार ने राम–साहित्य को एक दार्शनिक रूप दे दिया। विशेष बात यह थी कि रामभक्ति साहित्य रचना भी लेखकों का ध्येय हो गया।

स्वामी रामानन्द जी ने जिस सार्वजनिक भक्ति का प्रचार किया उसने मानस के प्रचार में भी काम किया तथा कवियों को राम साहित्य लिखने की प्रेरणा भी जोरों के साथ दी। राम भक्ति की विशेषता रही कि परम्परागत भक्ति के स्वरूप, दार्शनिक विचारधारा, हिन्दी राम–साहित्य की आधारभूमि रहे हैं।[1]

संस्कृत से लेकर आधुनिक काल तक की विभिन्न भारतीय भाषाओं में राम काव्य की एक सुदीर्घ परम्परा दिखाई पड़ती है। अति प्राचीन काल से मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र के शील, सौन्दर्य एवं शक्ति से मण्डित अलौकिक व्यक्तित्व के विभिन्न रूपों ने जनमानस को आकृष्ट किया है।

संस्कृत में रामकाव्य की सुदीर्घ परम्परा प्राप्त होती है। संस्कृत में रामकथा साहित्य की सभी विधाओं में लिखी गई– उपनिषद, पुराण, काव्य, नाटक, चम्पू, श्लेष काव्य, विलोम काव्य आदि। भक्ति साहित्य के अन्तर्गत राम को ब्रह्म की ही भाँति उपनिषद का पात्र बनाया गया और रामतापनीय मुक्तिकोपनिषद, सीतोपनिषद आदि तथा भगवद्गीता के समान रामगीता, रामगीता टीका आदि लिखे गए। भक्ति काव्यों में आनन्द रामायण, अध्यात्म रामायण, योगवशिष्ठ, महारामायण, भुषुण्डी रामायण, अगस्त्य रामायण, लोमश रामायण, अद्भुत रामायण, गीति रामायण आदि की रचना हुई।[2]

आदिकवि वाल्मीकि

लौकिक संस्कृत का पहला कवि होने का गौरव वाल्मीकि को प्राप्त है। भगवान राम ने रावण का वध कर रघुवंश की महिमा का विस्तार किया।

---

1 तुलसीदासोत्तर हिन्दी राम–साहित्य, डॉ0 राम लखन पाण्डेय, पृ0 276

2 भारतीय भाषाओं में रामकथा, आर0एन0 वैद्य, पृ0 6

भृगुवंशीय वाल्मीकि ने उन्हीं के यश का काव्य रूप में वर्णन किया।

^^ukjk;.kkRedk% lo% jkeLr%"oxqtk·Hkor~A
jko.kkUrdjLr}n~ j?kq.kka o'ko/kZu%AA
ckYehfdLrL; pfjra pØs HkkxZo lRre%A
rL; iq=k d`'kyokfo{okdqdqyo/kZukSAA[1]

महर्षि वाल्मीकि ने स्वरचित रामायण के चौबीस हजार श्लोकों के पाँच सौ सर्गों से युक्त सात काण्डों में भगवान विष्णु के रामरूप में प्राकट्य का विस्तार कर उनकी सम्पूर्ण भगवत्ता महत्ता का चित्रण किया है। विश्वामित्र ने दशरथजी से राम की भगवत्ता के बखान में कहा है कि– सत्यपराक्रमी राम क्या है– यह मैं जानता हूँ, वशिष्ठ जी तथा अन्य तपस्वी जानते हैं–

^^vga osf/k egkRekua jkea lR;ijkØee~A
of'k"Bks·fi egkrstk ;s pes rifl fLFkrk%AA**[2]

egf"kZ O;kl

महर्षि व्यास ने वेदों का विभाग किया, पुराणों और महाभारत की रचना की। ब्रह्मसूत्र इनकी ही देन है। महर्षि व्यास रचित प्रायः सभी पुराणों में भगवान राम की लीला और महत्ता का चिन्तन कहीं संक्षिप्त और कहीं विशद रूप में उपलब्ध होता है।

महाभारत के वन पर्व में भगवान राम का चरित्र संक्षिप्त रूप में आया है। अग्निपुराण में पाँचवे से ग्यारहवें अध्याय में रामावतार के वर्णन के प्रसंग में रामकथा का संक्षिप्त रूप प्रस्तुत किया है। कूर्मपुराण के पूर्वार्द्ध के इक्कीसवें अध्याय में लोकविश्रुत विष्णु स्वरूप भगवान राम के चरित्र का युक्ति युक्त वर्णन है। पद्यपुराण तथा स्कन्दपुराण में भी विस्तृत रूप में रामचरित उपलब्ध होता है। देवी भागवत के तीसरे स्कन्ध के 28वें से 30वें अध्यायों में श्रीराम के चरित्र का

---

1 मत्स्यमहापुराण, 12/50–51

2 वाल्मीकि रामायण, बालकाण्ड, सर्ग 19, श्लोक 14

बड़ी श्रद्धा और भक्ति से व्यास जी ने चित्रण किया है।[1]

कालिदास

कालिदास की रामकथा आदि कवि वाल्मीकि और महर्षि व्यास से अनुप्राणि है। महाकवि कालिदास ने अपने रघुवंश महाकाव्य में राम रूप में प्रकट होकर राक्षसराज रावण का वध करने वाले श्रीराम के दिव्य चरित्र का वर्णन दसवें से पन्द्रहवें सर्ग में किया है। कालिदास ने भगवान राम द्वारा रावण वध के उपरान्त अयोध्या लौटने पर कैकेयी के प्रति अत्यन्त मौलिक ढंग से सांत्वना के वचन कहलाकर माता कैकेयी के स्वाभिमान की जो रक्षा की वह राम–भक्ति–साहित्य को रघुवंश महाकाव्य के रचयिता की अलौकिक देन है–

^^d'rkU tfy'pk= ;nEc lR;kUukHk';r Lox.Qykn x|:u%A
rfPpUR;ekuk l|d'rk rofr tgkj yTtk HkjrL; ekr%AA[2]

कालिदास के रघुवंश, भास के प्रतिमानाटक, भवभूति के महावीर चरित और उत्तररामचरित, क्षेमेन्द्र की रामायण मंजरी, राजशेखर कृत बाल रामायण, जयदेव कृत प्रसन्नराघव और दामोदर मिश्र के महानाटक अथवा हनुमन्नाटक को इसका प्रमाण माना जा सकता है।[3]

गोस्वामी तुलसीदास

जहाँ तक हिन्दी भाषा का सम्बन्ध है, गोस्वामी जी के रामचरित जैसा लोकप्रिय ग्रन्थ तो दूसरा है ही नहीं। इसमें संत तुलसीदास ने श्रीराम के स्वरूप को सगुण भक्ति से जोड़कर ऐसी पुष्ट रचना की, उन्हें ईश्वर, परब्रह्म, जगत का सृजनकर्त्ता, पालनकर्त्ता और शिव–पार्वती के दायित्वों का निर्वाह करने वाला बना दिया। उसे साक्षात् एवं सर्वव्यापक ईश्वर के रूप में स्थापित किया। गोस्वामी जी

1 सन्मार्ग, श्री नन्द किशोर पाण्डेय, पृ0 147
2 रघुवंश–चतुर्दशः सर्गः श्लोक 16, पृ0 267
3 भारतीय भाषाओं में रामकथा, आर0एन0 वैद्य, पृ0सं0 6

की भक्ति–भावना लोक संग्रह की भावना से अभिप्रेरित है। तुलसीदास जी ने श्रीराम कथा को कामधेनु की संज्ञा दी है– ''रामकथा कलि कामद गाई।'' कामधेनु मनुष्य मात्र की समस्त कामनाओं को पूर्ण करती है। अतः जब हमारे जीवन में किसी भी प्रकार से कहीं से भी श्रीराम कथा रूपी कामधेनु का अमृतमय पय आ जाएगा तो हमारा, हमारे परिवार का हमारे समाज का आचार शुद्ध हो जायेगा। परिणामतः विचार शुद्ध हो जायेंगे। विचार शुद्ध हुआ तो जीवन से अंधकार मिट जायेंगे और जब विकार मिट गए तो जीवन में सहकार बढ़ जायेगा, और जब जीवन में सहकारी भाव आ जायेगा तो जीवन में अपार प्रेम बढ़ जायेगा। प्रेम के आते ही मोह रूपी अंधकार समाप्त हो जाएगा तब केवल प्रेम ही रह जाएगा और जैसा गोस्वामी जी ने कहा है कि – रामहिं केवल प्रेम पियारा। जानि लेहु जो जाननिहारा।। इस प्रकार श्रीराम कथा रूपी कामधेनु की सेवा करें, क्योंकि श्री रामकथा जीवन स्तर को सुधार देती है।[1]

इस प्रकार तुलसीदास ने रामकथा के विविध प्रसंगों के माध्यम से राजनीतिक, सामाजिक एवं पारिवारिक जीवन आदर्शों को जनता के सामने प्रस्तुत कर विश्रृंखलित समाज को पुनः संगठित किया। रामकथा को जन–जन तक सुलभ कराने का श्रेय गोस्वामी जी को है, और वे ही राम भक्ति काव्य परम्परा के देदीप्यमान नक्षत्र हैं।

आधुनिक हिन्दी साहित्य में रघुनाथ दास का 'विश्रामसागर', मैथिलीशरण गुप्त का 'साकेत' और 'पंचवटी', अयोध्या सिंह उपाध्याय का 'रामचरित चिन्तामणि', केदार मिश्र का 'कैकेयी' महत्वपूर्ण रचनाएँ हैं। मन–वचन की भक्ति को कर्मयोग में लाकर एक नया अध्याय राम की भक्ति में हिन्दी खड़ी बोली के इन समर्थ मानववादी, कवियों ने आरम्भ किया। निश्चय ही इसमें युग की प्रेरणा ने भी काम किया है। गांधी जी भारत की राजनीति में आगे आये, इसका भी

---

1 मानस संगम, अंक 2001, पृ0 12

प्रभाव इन कवियों पर पड़ा है।

खड़ी बोली के इन कवियों ने यदि राम काव्य सम्बन्धी अपनी रचनाएँ न की होतीं अथवा राम काव्य में वह नया मोड़ ले आने का संयोग न उपस्थित हुआ होता तो आज लोक जीवन में राम भक्ति की वह दृढ़ता न रहती क्योंकि रसिक साधकों की मधुर उपासना ने उसे एकांगी कर पंगु बना दिया था और उसे लोक जीवन से खींचकर साम्प्रदायिक साधना का जो रूप दे दिया था उससे राम के चरित्र की व्यापकता समाप्त हो गयी थी। केवल इन एकांगी सम्प्रदाय साधकों तक ही उनकी व्याप्ति थी।

खड़ी बोली के काव्यों में राम की भक्ति ने अपना जो रूप परिवर्तित किया– वह तीन प्रमुख रूपों में है– आर्य राष्ट्रीयता, विश्व मानवता तथा साम्राज्यवाद के दमन के लिए अदम्य शक्ति की आराधना। भगवान राम का चरित त्याग तथा वीरता का चरित है। खड़ी बोली के कवियों ने उनके त्याग और वीर–धर्म का आदर्श प्रस्तुत कर उससे लोक को त्याग तथा वीरता की प्रेरणा दी है। जहाँ भक्तिकालीन कवियों तथा तुलसीदास के परवर्ती राम–साहित्यकारों ने अनुनय विनयपूर्वक राम की भक्ति करने के लिए प्रेरित किया वहाँ पर आधुनिक साहित्यकारों ने उनके चरित से अनुप्रेरित होकर उनके उदात्त कर्मों की ओर अग्रसर होने के लिए सन्नद्ध किया, केवल अन्ध श्रद्धा के वशीभूत होकर नाम की रट लगाने के लिए नहीं। रामकाव्य की यह परम्परा आदि कवि वाल्मीकि से लेकर अद्यावधि प्रवाहमान है। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त का सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य ‘साकेत’ गुप्त जी के ही शब्दों में–

^^jke rqEgkjk pfjr Lo;a gh dkO; gSA
dkbZ dfo cu tk, lgt lEHkkO; gS**A

तो आधुनिक काल के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर सूर्यकान्त त्रिपाठी की सबसे सशक्त

रचना 'राम की शक्तिपूजा' है।[1]

आज भी आधुनिक कवियों के माध्यम से राम का विराट, शक्तिमान और लोकोत्तर चरित उसी महनीय रूप में सुरक्षित है और भक्ति की वही पावन धारा आज भी अजस्र रूप में बह रही है। कालस्यपूर्ण व्यवधान केवल रसिक सम्प्रदाय के कवियों द्वारा उपस्थित हुआ था। किन्तु आज हम देखते हैं कि अनेक प्रतिभाशाली लेखकों के योग से और भक्ति की उस शक्तिमयी धारा के वेग से वह व्यवधान विलीन हो गया है और आज राम की उस मानव भक्ति, शक्ति आराधना में गृहस्थ, विरक्त, राजनीतिक सभी डूब रहे हैं। इसका प्रमाण इससे बढ़कर क्या होगा कि बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', रामवृक्ष बेनीपुरी जैसे राजनीतिज्ञों ने भी रामचरित पर अपनी रचनायें प्रस्तुत की हैं।

इस प्रकार न केवल भारतीय लोकमानस के बीच रामकथा की लोकप्रियता है बल्कि आज वह विश्वमानस पटल पर छा गयी है। वाल्मीकि और तुलसी के राम विश्व के राम बन गये हैं। इतने युग परिवर्तनों के बाद भी रामकथा रचनाकारों की प्रेरणास्रोत बनी हुई है। प्रत्येक नये युग का कवि जब अपने युग की पृष्ठभूमि पर तत्युगीन समस्याओं पर अपनी नजर डालता है तो उसके समाधान हेतु उसे राम ही खड़े दिखाई पड़ते हैं रामकथा की यह विशेषता, एक ऐसा तथ्य है जो यह बताता है कि आगे के युग में भी रामकथा पर लेखनी उठाने वाले नवनवोन्मेषी रचनाकारों की परम्परा एवं मौलिकता की कड़ी कभी विच्छिन्न नहीं होगी। सत्य तो यह है कि राम की कथा, राम का चरित्र अपने में इतना गरिमामय है कि उसे उपजीव्य बनाने वाला सहज ही कवि बन जाता है।

¼iv½ *पौराणिक परम्परा एवं महत्व*

शाश्वत आदर्शों और जीवन मूल्यों का सम्यक् निदर्शन मर्यादा पुरुषोत्तम

---

1 सन्मार्ग, अंक 1990, श्री नंद किशोर पाण्डे, पृ0 150

राम के मनोहारी चरित में दिखाई पड़ता है। त्याग, कर्म और प्रेम से सम्पृक्त रामकथा ने समूची वसुन्धरा को अपनी ओर आकर्षित किया है। उदात्त गुणों के संवाहक राम ईश्वर के रूप में भक्ति और आस्था में ओत–प्रोत है। सनातन संस्कृति के प्राणतत्व राम की कथा का अंकन साहित्य के विपुल आयामों में समाहित हैं। आदिकवि वाल्मीकि युग सृष्टा कवि तुलसीदास के अतिरिक्त अनगिनत रचनाकारों ने अपनी लेखनी से रामकथा का जीवन्त चित्रण करके गौरव की अनुभूति की है। रामकथा का प्रेरक तत्व अशक्त को शक्ति, नास्तिक को भक्ति, भक्ति को वैराग्य और विरागी को मोक्ष तो दे ही रहा है। अंधेरे में बिना किसी सम्बल के न सिर्फ जीने की वरन् पाशविक प्रवृत्तियों पर विजय पाने की चमत्कारिक शक्ति भी देता रहा। भारतीय आर्ष ग्रन्थों में श्रीराम कथा के विविध स्वरूप वर्णित और उपलब्ध हैं। वेदों में श्रीरामकथा संकेतात्मक शैली में उल्लिखित हैं। यह सर्वविदित है कि सभी देवता विश्व के कारण भूत हैं। विद्वानों का कथन है कि वंदना चाहे जिस देव की हो लेकिन वह श्रीराम स्तुति में पर्यवसित होती है। वेदों में वर्णित नदियों, महापुरुषों, स्थानों में कतिपय उल्लेख श्रीरामकथा के स्वीकृत प्रमाण हैं।

दशमुख रावण और रामराज्य के सम्बन्ध में भी वेदों में विवरण उपलब्ध हैं–

^^cjkã.kks tKs iFkeks n'k'kh"kksa n'kkL;%
l lkses iFke% iik l pdkjkjl fo"ke**AA[1]

(1) पुराण की दृष्टि से

भारतीय पुराण हमारे इतिहास का निरूपण और साक्ष्य हैं। इनमें श्रीरामचरित विशेष रूप से वर्णित हैं। ब्रह्म पुराण के 109वें अध्याय में सती प्रकरण उपलब्ध हैं। इसमें कैकेयी को वरदान, राजा दशरथ द्वारा श्रवण कुमार का वध और उनके माता–पिता के श्राप, श्री राम जन्म, विश्वामित्र, अहिल्या

1 अथर्ववेद (भाग–1), चतुर्थकाण्डम्, छठा सूक्त, प्रथम मंत्र

उद्धार, सीता–राम विवाह तथा दशरथ का नरक वास वर्णित है। इसी पुराण के सूर्यवंश वर्णन में राम के एक ही पुत्र कुश का उल्लेख है, लव का नहीं। मार्कण्डेय, ब्रह्माण्ड और मत्स्य पुराणों में रामचरित का वर्णन नहीं है जबकि विष्णु पुराण, वायु पराण, कूर्म पुराण, नारद पुराण, वाराह पुराण, लिंग पुराण और वामन पुराण में रामकथा संक्षेप में हैं।

'वाराह पुराण' में उल्लेख है कि ज्येष्ठमास की द्वादशी को राम–द्वादशी व्रत करने से राजा दशरथ को पुत्रों की प्राप्ति हुई थी। कूर्मपुराण में उल्लेख है कि जब रावण यति के वेश में सीता का हरण करने आया तो सीता ने अग्निदेव की प्रार्थना वह्नि देवाष्टक के द्वारा की थी और तब अग्निदेव ने सीता को ग्रहण कर उनकी जगह माया–सीता को प्रकट कर दिया था जिसका अपहरण रावण ने किया था।

सबसे अधिक लोकप्रिय पुराण 'श्रीमद्भागवत पुराण' में नवम्स्कन्ध में रामचरित वर्णित हैं राम ने सीता स्वयंवर–गृह में धनुष को, जिसे तीन सौ व्यक्ति मुश्किल से ला पाये थे (त्रिशतोपनीतम्), तोड़ा ''सज्जीकृतं नृप बभंज मध्ये''। शूर्पणखा के नाक कान राम ने ही काटे थे। रावण वध के पश्चात् राम की आज्ञा से विभीषण ने अपने स्वजनों का शास्त्रीय विधि से अन्त्येष्टि कर्म किया और राम ने सीता को (बिना अग्नि परीक्षा के ही) अपना अयोध्या के लिए प्रस्थान किया। सिंहासनारूढ़ होने के बाद एक बार राम ने ही रात के समय छद्मवेश में घूमते हुए अपने कानों से सीता का लोकापवाद बहुत लोगों से ''लोकाद् बहुमुखाद्'' सुना (जबकि अन्य रामकथाओं में केवल एक व्यक्ति धोबी या दुर्मुख से ही इस प्रकार का लोकापवाद सुनने का उल्लेख है)। राम ने इससे भयभीत होकर सीता का त्याग किया। सीता ने पुत्रों को वाल्मीकि के हाथों में सौंपकर श्रीराम का ध्यान करते हुए पृथ्वी में प्रवेश किया। उसके बाद श्रीराम ने ब्रह्मचर्यव्रत धारण कर तेरह हजार वर्ष तक अखण्ड अग्निहोत्र किया। इस प्रकार इस कथा में राम

की सेना के साथ लवकुश के युद्ध का वर्णन नहीं है।

'गरुड़ पुराण' की रामकथा में भी शूर्पणखा के नाक–कान राम ही काटते हैं ''निकृत्य कर्णौ नासे च रामेणाथापराहिता''। परन्तु रावण–विजय के पश्चात् सीता को राम ने शुद्ध करके ही ग्रहण किया ''सीतां शुद्धां गृहीत्वाथ विमाने पुष्पके स्थितः''। यह भी कहा गया है कि राम ने गयातीर्थ जाकर पितरों का तर्पण किया।

'स्कन्दपुराण' में रामकथा कई स्थलों पर वर्णित है। पहले तो माहेश्वरखण्ड के अन्तर्गत रावणोपाख्यान में रावण के अत्याचारों से त्रस्त देवताओं की प्रार्थना पर भगवान विष्णु ने राजा दशरथ के पुत्र के रूप में जन्म लेने का आश्वासन दिया और आगे चलकर रावण का वध किया। फिर ब्रह्मखण्ड में सेतुमाहात्म्य के अन्तर्गत रामचरित है जिसमें सेतु निर्माण का प्रसंग है और उसके पूर्व शिवलिंग की स्थापना का। रावण वध के पश्चात् राम ने रामेश्वर लिंग की स्थापना की। अवन्तीखण्ड के अन्तर्गत वाल्मीकि की कथा है। सेतुमाहात्म्य में यह भी कथा है कि अयोध्या वापस जाते समय विभीषण ने राम से अनुरोध किया कि अब सेतु को नष्ट कर दिया जाय ताकि कहीं ऐसा न हो कि भारत के मनुष्य उत्सुकतावश लंका जायें और राक्षस उन्हें खा जायें। राम–नाम की महिमा का प्रसंग सबसे पहले स्कन्द पुराण में है। स्कन्द पुराण के ब्राह्मखंड में कथा है कि एक बार पार्वती ने शिवजी से पूछा कि आप तो स्वयं सब प्राणियों के आदि स्वरूप हैं, तो आपके द्वारा यह किसका जप किया जाता है, तब शिव जी ने कहा मैं श्रीराम के नाम का जाप किया करता हूँ।

'पद्मपुराण' में दी गई रामकथा के अनुसार रावण वध के पश्चात् ब्रह्महत्या के पाप के प्रायश्चित के रूप में राम ने अगस्त्य ऋषि के आदेशानुसार अश्वमेघ यज्ञ किया। इसी पुराण में रामायण की प्राचीन कथा भी दी गयी है जिसे जाम्बवान् ने राम को सुनाया था। इसमें वाल्मीकि रामायण से बहुत कम अन्तर

है।

'शिवपुराण' में नारदमोह, दक्ष–यज्ञ विध्वंस, पार्वती तपस्या और शिव पार्वती विवाह की कथा वर्णित है जिसे तुलसीदास ने रामचरित मानस में स्थान दिया है।

उपपुराणों में देवभागवत् पुराण में भी रामचरित संक्षेप में दिया गया है। इसके अनुसार राम ने ही शूर्पणखा के नाक–कान काटे थे।

'कालिका पुराण' में भी दक्ष यज्ञ के कारण सती का अग्नि प्रवेश और शिव पार्वती विवाह का वर्णन है।

'सूर्य पुराण' में भी रामकथा का उल्लेख है। रामकथा अन्य कई उपपुराणों में भी है (जैसे कि वह्नि पुराण, नृसिंहपुराण) ऐसा उल्लेख फादर कामिल बुल्के ने अपने पुस्तक में किया है।[1]

इस प्रकार वाल्मीकि रामायण की रचना के कई सौ वर्षों बाद पुराणों ने अपनी–अपनी धार्मिक आस्था के अनुसार रामायण की कथा में थोडा बहुत परिवर्तन कर रामचरित का वर्णन किया है।

2. इतिहास की दृष्टि से

प्राचीनता और उपलब्धि की दृष्टि से, राम सम्बन्धी सर्वप्रथम, पर्याप्त और विस्तृत प्रामाणिक सामग्री से परिपूर्ण रचना है– 'वाल्मीकि रामायण' जिसको 'आदिकाव्य' की संज्ञा भी दी गयी है। यह मुख्यतः महामानव राम की काव्यमय जीवन–गाथा है, और इसे वाल्मीकि ने इतिहास–पुराण कहा है–

^iT;'p iBÜpufefrgkl% ijkrue*A[2]

महाभारत पाँच हजार वर्षों से भी अधिक प्राचीन है तब महाभारत में वर्णित रामायण की अत्यधिक प्राचीनतासुतरां सिद्ध होती है। पुराणवचनों के अनुसार भी

---

1 भारतीय भाषाओं में रामकथा, डा0 आर0एन0 वैद्य, पृ0 30

2 वाल्मीकि रामायण, युद्धकाण्ड, 128–144

24वें त्रेता में वशिष्ठ सहित राम का प्रादुर्भाव हुआ था। उसी समय महर्षि वाल्मीकि का आविर्भाव हुआ था। इस दृष्टि से 24वें त्रेता में द्वापर की सन्धि में अर्थात् अब से 17,74,906 वर्ष पूर्व श्रीराम के शासनकाल में रामायण की रचना हुई थी, यह अनन्तश्रीविभूषित स्वामी करपात्री जी का सुचिन्तित मत है।[1] अस्तु इस तरह रामायण संसार का सर्वाधिक प्राचीन आर्ष इतिहास ग्रन्थ है और इस इतिहास ग्रन्थ के कई सौ वर्षों के बाद राम को श्री विष्णु का अवतार मानकर भगवान का स्थान दे दिया गया और पौराणिक साहित्य में भी, विशेषकर बाद के पुराणों में, रामभक्ति का उल्लेख मिलने लगा। डॉ0 भण्डारकर की पुस्तक ''वैष्णविज्म–शैविज्म'' के अनुसार यह स्थिति विशेषकर ग्यारहवीं शताब्दी के लगभग प्राप्त हुई। परन्तु राम की पूजा गुप्तकाल में प्रारम्भ हो चुकी थी और अग्निपुराण (लगभग आठ सौ ई0) में राम की मूर्ति का और विष्णु धर्मोत्तर पुराण (पाँचवी शताब्दी ई0) में भी राम–मूर्ति निर्माण के नियमों का उल्लेख है। हरिवंश पुराण (लगभग चार सौ ई0) में रामकथा का संक्षिप्त उल्लेख है और अवतारों की सूची में राम भी हैं।[2]

इस प्रकार रामायण के इतिहास पक्ष को झुठलाना आसान नहीं है। राम कथा इतिहास है। पुरातत्त्वविद् इमारतें खोजते हैं रामकथा का मुख्य और महत्वपूर्ण क्षेत्र दण्डकारण्य है। चित्रकूट है। वास्तविक इतिहास पर्वतों में है। गंगा–यमुना, मन्दाकिनी और वन–उपवन में है। इतिहासकार दण्डकारण्य वन उपवन को नहीं झुठलाते। अयोध्या और सरयू श्रंगवेरपुर निषादराज तथा प्रयाग और गंगा यमुना संगम को भी नहीं झुठलाया जा सकता। राम का इतिहास हम सबसे भी ज्यादा यहाँ के लोक जीवन में है। लोक स्मृति और लोक कथाओं में है। दुनिया के किसी भी देश के इतिहास का नायक गाँव गली तक प्रत्येक जन

---

1 महर्षि वाल्मीकि, डा0 जानकी प्रसाद द्विवेदी, पृ0 18

2 भारतीय भाषाओं में रामकथा, डा0 आर0एन0 वैद्य, पृ0 26

की स्मृति का स्थायी हिस्सा नहीं बन पाया। क्या वाल्मीकि की रामायण के कारण ही राम जन–जन व्यापी हो गये? रामायण संस्कृत में है। तुलसीदास की रामचरितमानस अकबर के समय हिन्दी (अवधी) में लिखी गयी। क्या वाल्मीकि ने राम को 'महानायक' बनाया? या महानायक होने के कारण ही वाल्मीकि ने श्रीराम के इतिहास को काव्य बनाया। वाल्मीकि ने रामायण के प्रारम्भ में ही स्पष्ट किया है कि उन्होंने अपना नायक श्रीराम को ही क्यों चुना?

राम इतिहास हैं। वाल्मीकि, तुलसीदास, कम्बन और तिरुवल्लर आदि ने इसी इतिहास से प्रेरणायें लीं। भारत में प्राचीन काल से ही तमाम विचारधाराएँ थीं। पुरुषार्थवादी कर्म प्रधान एक धारा थी। यहाँ लक्ष्मण उसके प्रवक्ता हैं। धर्म प्रधान धर्म आधारित कर्म करते हुए फलश्रुति को ईश्वर–इच्छा मानने की एक मर्यादापूर्ण धारा थी। श्रीराम इस धारा के नायक हैं। वाल्मीकि दोनों धाराओं का यथातथ्य वर्णन करने वाले कवि व इतिहासकार हैं। 'जीवन में कर्म की महत्ता है लेकिन सृष्टि की ढेर सारी शक्तियाँ भी काम करती हैं कोई उन्हें देवता कहता है कोई उन्हें ऊर्जा। मनचाहे फल सारी शक्तियों की विधायक ऊर्जा से ही मिलते हैं'।[1] भारत में राम को इसी ऊर्जा का पर्याय माना गया है। जिसके लिए परब्रह्म शब्द भी प्रचलित है। 'राम' को 'परब्रह्म' नाम साम्य से मानकर उन्हें ऐतिहासिक कहना स्वयं भारतीय आस्था के विरूद्ध हो जायेगा क्योंकि ऐतिहासिक होने के लिए सर्वप्रथम देश काल की सीमाओं में बंधना होगा। राम केवल रामायण काव्य तक सीमित रह जायेंगे वे शाश्वत् सार्वभौम अनादि अनन्त अप्रमेय नहीं होंगे। अस्तु शोधानुसार दशरथनन्दन राम ऐतिहासिक हैं और घर–घर व्यापी राम पौराणिक।

3. भौगोलिक दृष्टि से

भौगोलिक दृष्टि से अयोध्या की स्थिति 26^0 48′ उत्तरी अक्षांश व $82^0$13′

---

1 मानस संगम, अंक 2008, पृ0 98

पूर्वी देशान्तर के मध्य, वर्तमान फैजाबाद नगर से 5 मील सरयू नदी के दाहिने तट पर बसा है। रामायण में अयोध्या को सरयू नदी के तट पर, कौशल राज्य के प्रमुख नगर (राजधानी) के रूप में बसा कहा गया है।[1] वाल्मीकि ने शोभशालिनी महापुरी को बारह योजन लम्बी और तीन योजन चौड़ी बताया है। वहाँ बाहर के जनपदों में जाने का जो विशाल राजमार्ग था, वह उभयपार्श्व में विविध वृक्षावलियों से विभूषित होने के कारण सुस्पष्टतया अन्य मार्गों से विभक्त जान पड़ता था।[2]

श्रीराम अयोध्या में पैदा हुए इस तथ्य की पुष्टि ईसा के जन्म से पूर्व तथा बाद में लिखे गये भारतीय और विदेशी साहित्यकारों द्वारा रचित साहित्य से होती है– जैसे वाल्मीकि रामायण, रामचरितमानस, कालीदास द्वारा रचित रघुवंशम् तथा बौद्ध और जैन साहित्य आदि। इन पुस्तकों में अयोध्या की स्थिति, समृद्ध स्थापत्य कला के वर्णन के साथ–साथ विशाल क्षेत्र में फैले हुए सुन्दर वनों तथा भव्य मंदिरों का वर्णन भी है। अयोध्या नगरी सरयू के किनारे बसी है जिसके एक ओर गंगा और पांचाल प्रदेश तथा दूरी ओर मिथिला राज्य हैं सात हजार वर्ष का समय बहुत लम्बी अवधि है और इस अवधि में भूकम्पो, भूचालों, बाढ़ों ने क्षेत्रीय स्थिति बदल दी। नगर/भवन ध्वस्त हो गए। इसलिए अवशेषों के आधार पर सत्य की खोज करना अत्यंत कठिन कार्य है। वर्तमान अयोध्या सिकुड़कर छोटी सी हो गयी है तथा 40 किलोमीटर उत्तर/दक्षिण में मार्ग बदल चुकी है।[3]

डॉ0 राम अवतार, श्रीराम की 14 वर्ष की वनवास यात्रा की खोज में लगे हैं। अयोध्या से यात्रा आरम्भ करके वे रामेश्वरम् तक गये। उन्होंने श्री सीताराम जी के जीवन से सम्बन्धित रामायण से वर्णित 194 स्थानों की खोज की है, जहाँ

---

1 रामायण, बालकाण्ड, सर्ग–5, 5
2 रामायण, बालकाण्ड, सर्ग–5, 7
3 मानस संगम, श्रीराम–काल्पनिक अथवा वास्तविक, सरोज बाला, पृ0 76, अंक 17, वर्ष 2006

अभी तक स्मृति चिन्ह पाये जाते हैं। इसमें तमसा तट (भाण्ड्हा), श्रृंगवेरपुर (सिंगौर), भारद्वाज आश्रम (इलाहाबाद में स्थित), अत्रि आश्रम, मारकण्डेय आश्रम (मारकुण्डी), चित्रकूट, पर्णकुटी (वर्तमान गोदावरी के किनारे), सीता सरोवर, रामकुण्ड त्रयम्बकेश्वर, शबरी आश्रम, किष्किंधा (ग्राम अनेगोंडी), धनुषकोटि तथा रामेश्वरम् मंदिर शामिल है।[1]

अयोध्या से लेकर रामेश्वरम् तक का वन यात्रा मार्ग पंचवटी (नासिक–महाराष्ट्र) तक सीता रसोई एवं सीता कुण्ड के तीर्थों से चिन्हित है। राम के प्रथम वनवास शिविर चित्रकूट में सबसे अधिक प्राचीन पुरातात्विक स्थल हैं–भरतकूप जिसका जल आज भी पीने योग्य है। यह कूप राम के वहाँ जाने से पहले ही विद्यमान था। वर्तमान स्थापत्य के साथ ही 12वीं शताब्दी से पहले की मूर्तियाँ इसे ऐतिहासिक महत्व प्रदान करती हैं।[2]

चित्रकूट में गोदावरी गुफा प्रागैतिहासिक मानव का निवास रही है। इसे सीता का निवास कहा जाता है। चूना पत्थर की गुफा के मध्य में उभरी एक अमूर्त आकृति को राक्षस का शरीर बताया जाना इस स्थान की सम्बद्धता रामायण से प्रमाणित करता है।

नासिक पंचवटी में रामायण की सभी घटनाओं से सम्बद्ध तीर्थ स्थल यथा स्थान प्राप्त होते हैं। पंचवटी में मिट्टी के टीले में सीता गुफा की स्थिति एक प्राचीन मानव आवास का प्रतीक है। ''किष्किंधा–तुंगभद्रा नदी तट पर स्थित अनागुंदी ग्राम (बेल्लारी–कर्नाटक) रामायण के प्रागैतिहासिक प्रमाणों को संजोए हुए है। चक्रतीर्थ पर स्थित श्री कोदण्डराम मंदिर से सम्बन्धित जनमेजय का

---

1 मानस संगम, श्रीराम–काल्पनिक अथवा वास्तविक, सरोज बाला, पृ0 76, अंक 17, वर्ष 2006

2 मानस संगम, अंक 1993, रामायण का असंविज्ञात पुरातत्व, डॉ0 कृष्ण नारायण पाण्डेय, पृ0 110

ताम्रपत्र ''रामायणमीमांसा'' में श्री करपात्री जी ने उद्धृत किया है।[1] इसमें वर्णित भूगोल आज की स्थिति से पूरी तरह मिलती–जुलती है।

वाल्मीकि रामायण के अनुसार श्रीराम की सेना ने रामेश्वरम् से श्रीलंका तक समुद्र के ऊपर पुल बनाया। इसी पुल को पार कर श्रीराम ने राक्षस राजा रावण को हरा दिया। हाल ही में नासा ने इंटरनेट पर मानव निर्मित पुल के वो अवशेष दिखाये हैं जो पॉक स्ट्रेट में समुद्र के नीचे रामेश्वरम् से लंका तक 30 किलोमीटर लम्बे रास्ते में पड़े हैं। हाल ही में समुद्र की खोज करने वाली एक अमेरिकन कम्पनी ने इंटरनेट पर एक पुल के चित्र डाले हैं। इस पुल के अवशेष समुद्र में रामेश्वरम और श्रीलंका के बीच में पाये गये हैं।

इस प्रकार समुद्र में डूबी द्वारका की तरह ''राम सेतु'' का अस्तित्व भी प्रमाणित होता है।

4. *खगोलीय दृष्टि से*

श्रीराम द्वारा स्थापित आदर्श हमारी प्राचीन परम्पराओं तथा जीवन मूल्यों के अभिन्न अंग है। वास्तव में श्री राम भारतीयों के रोम–रोम में बसे हैं। परन्तु प्रश्न यह उठता है कि श्रीराम कौन थे? कहाँ पैदा हुए? क्या उन्होंने अयोध्या से रामेश्वरम् तक वनों, जंगलों तथा पर्वतों की वास्तव में यात्रा की थी?

श्रीराम की कहानी प्रथम बार महर्षि वाल्मीकि ने लिखी थी। महर्षि वाल्मीकि एक महान खगोलविद् थे।

आज जब कुछ धर्मनिरपेक्ष चिंतन के पक्षधर इतिहासज्ञ श्रीराम को एक मिथक बना देते हैं। ऐसे समय में खगोल विज्ञानी महर्षि वाल्मीकि प्रणीत रामायण के श्लोकों से श्रीराम जन्म व जीवन की अन्यान्य घटनाओं की तिथियाँ प्रमाणित सिद्ध की हैं। महर्षि वाल्मीकि रामायण काल में विद्यमान थे उन्होंने श्रीराम के

---

1 मानस संगम, अंक 1993, रामायण का असंविज्ञात पुरातत्व, डॉ0 कृष्ण नारायण पाण्डेय, पृ0 110

जीवन को देखा और तद्विषयक कथ्य और तथ्य प्रमाणिक रूप से प्रस्तुत किया।

खगोल विज्ञान ने श्रीराम को मिथ न मानकर इस संसार में जन्म ग्रहण करने को स्वीकारा है। डॉ0 पुष्कर भटनागर व सुश्री सरोज बाला के द्वारा महर्षि वाल्मीकि प्रणीत रामायण के श्लोकों तथा तिथियों को नासा के प्रोग्राम व खगोलीय विज्ञान पर शोध कर प्रमाणित तथ्य व तिथियाँ समाज के समक्ष प्रस्तुत की हैं। इन्हीं तथ्यों को सुजीत चक्रवर्ती द्वारा 'जो मिथ' शीर्षक से केम न्यूज नेटवर्क टुडे (अंग्रेजी पत्रिका) के अगस्त 2005 में प्रकाशित किया गया है।[1]

डॉ0 पुष्कर भटनागर ने अमेरिका से 'प्लैनेटेरियम' नामक साफ्टवेयर प्राप्त किया जिससे सूर्य/चन्द्रमा के ग्रहण की तिथियाँ तथा अन्य ग्रहों की स्थिति तथा पृथ्वी से उनकी दूरी वैज्ञानिक तथा खगोलीय पद्धति से जानी जा सकती है। इसके द्वारा महर्षि वाल्मीकि द्वारा वर्णित खगोलीय स्थितियों के आधार पर आधुनिक अंग्रेजी कैलेण्डर की तारीखें निकाली हैं। इस प्रकार उन्होंने श्रीराम के जन्म से लेकर 14 वर्ष के वनवास के बाद वापस अयोध्या पहुँचने तक की घटनाओं की तिथियों का पता लगाया है जो बहुत ही रोचक एवं विश्वसनीय हैं।

जब उपर्युक्त खगोलीय स्थिति को कम्प्यूटर में इन्टर किया गया तो 'प्लैनेटेरियम साफ्टवेयर' के माध्यम से यह निर्धारित हुआ कि 10 जनवरी 5114 ई0पू0 दोपहर के समय ग्रहों, नक्षत्रों तथा राशियों की स्थिति बिल्कुल वही थी, जो महर्षि वाल्मीकि ने वर्णित की है। इस प्रकार श्रीराम का जन्म 10 जनवरी सन् 5114 ई0पू0 (7117 वर्ष पूर्व) हुआ जो कि भारतीय कैलेण्डर के अनुसार चैत्र मास की शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि है और समय 12 बजे से 1 बजे के बीच का है। सारे भारत में आज तक ठीक इसी दिन इसी समय राम जन्म महोत्सव मनाया जाता है।[2]

---

1 श्रीराम जन्म का खगोलीय अध्ययन, अनूप शुक्ल, मानस संगम 2005, पृ0 116

2 श्रीराम काल्पनिक अथवा वास्तविक, सरोजबाला, मानस संगम, 2006, पृ0 75

श्रीराम ने वनवास की तिथि वाल्मीकि रामायण के अयोध्याकाण्ड के अनुसार (2/4/18) महाराज दशरथ श्रीराम का राज्याभिषेक करना चाहते थे क्योंकि उस समय उनका नक्षत्र सूर्य, मंगल और राहु से घिरा हुआ था। ऐसी खगोलीय स्थिति में या तो राजा मारा जाता है या वह किसी षड़यंत्र का शिकार हो जाता है। राजा दशरथ मीन राशि के थे और उनका नक्षत्र रेवती था, यह सभी तथ्य कम्प्यूटर में डाले गये तो पाया गया कि 5 जनवरी वर्ष 5059 ई0पू0 के दिन सूर्य मंगल और राहू तीनों मीन राशि के रेवती नक्षत्र पर स्थित थे। यह सर्वविदित है कि राज्यतिलक वाले दिन ही राम को वनवास जाना पड़ा था। इस प्रकार यह वही दिन था जब श्रीराम को अयोध्या छोड़कर 14 वर्ष के लिए वनवास जाना पड़ा था। इस प्रकार श्रीराम की आयु वर्ष (5114–5089) की निकलती है तथा वाल्मीकि रामायण में अनेक श्लोक यह इंगित करते हैं कि जब श्रीराम ने 14 वर्ष के लिए अयोध्या से वनवास को प्रस्थान किया तब वे 25 वर्ष के थे।[1]

अतः हमें इस बात पर गर्व होना चाहिए कि महर्षि वाल्मीकि प्रथम महान खगोलविद् थे। ग्रह–नक्षत्रों की स्थिति का उनका ज्ञान समय के अनुसार सत्य सिद्ध हुआ है और कम्प्यूटर तथा साफ्टवेयर के आविष्कारों ने यह सिद्ध कर दिया है कि ग्रहों की स्थिति के आकलन में उन्होंने नाम मात्र की भी त्रुटि नहीं की।

इस प्रकार नासा के साफ्टवेयर प्रोग्राम व खगोलीय अनुसंधान, प्राच्य तथ्यों को प्रमाणिक सिद्ध करते हैं।

(ख) सुसिद्धान्तोत्तम रामखण्ड अवधी महाकाव्य का संक्षिप्त परिचय

¼i½ *विशाल महाकाव्य*

---

1 श्रीराम काल्पनिक अथवा वास्तविक, सरोजबाला, मानस संगम, 2006, पृ0 76

राजा रुद्र प्रताप सिंह 19वीं शताब्दी के प्रारम्भ में हुए थे। वे प्रयाग (इलाहाबाद जनपद) के माण्डा रियासत के राजा थे। धार्मिक कार्यों में उनकी अत्यन्त रुचि थी। उन्होंने रामकथा को लेकर एक विशालकाय महाकाव्य 'सुसिद्धान्तोत्तम रामखण्ड' की रचना की। यह रजिस्टर के आकार में 9 जिल्दों में स्थूलाक्षरों में मुद्रित है। भक्तिकाव्य एवं इतिहास से इसका बहुत महत्व है। इसकी कथा काण्ड या पथों में विभक्त है।

भारतीय साहित्यशास्त्र के अनुसार सुसिद्धान्तोत्तम रामखण्ड एक सफल तथा विशाल महाकाव्य है। आकार की दृष्टि से तो यह एक विशाल महाकाव्य है ही– कथा–रस प्रवाह की दृष्टि से और प्रमुख चरित्र के व्यापक चित्रण की दृष्टि से भी इस महाकाव्य की विशालता असंदिग्ध है। आचार्य भामह द्वारा प्रतिपादित महाकाव्य की कसौटी महतां च महच्च यत् पर महाकाव्य रामखण्ड रामायण बिल्कुल खरा उतरता है। कवि कोई पूर्व धारणा बना कर नहीं आगे बढ़ता और न तो जानबूझ कर कथा के आकार को खींचता–तानता और आगे बढ़ाने का प्रयत्न ही करता है। यदि ऐसा कोई सायास प्रयत्न किया गया होता तो निश्चित रूप से कथा–रस प्रवाह विच्छिन्न हो जाता। प्रवाहित सरिता की तरह महाकाव्य शनैः–शनैः योजनाबद्ध तरीके से रचा गया है। इसमें वेद, वेदान्त, पुराण, रामायण, महाभारत, मनुस्मृति, नीतिशास्त्र, धर्मशास्त्र, आयुर्वेद, ज्योतिष, ऋतु विज्ञान, भूगोल, इतिहास और लोक परम्पराओं को समेटा गया है। देशदशा का वर्णन सृष्टि के आदि से लेकर अंग्रेजी काल तक वर्णित है। वर्णन और इतिवृत्त की इसमें बहुलता है। विस्तार के लिए जहाँ भी अवसर मिला है– वहाँ कवि ने लाभ उठाया है। इसके भाव तथा कलापक्ष सम्पन्न हैं। माण्डा जो कवि का अपना राज्य था, उसकी भाषा में इस महाकाव्य की रचना की है। इसकी भाषा में अवधी भोजपुरी, छत्तीसगढ़ी बघेली, बुन्देली और संस्कृत का मेल है।

कवि रुद्र प्रताप वाल्मीकि रामायण से प्रभावित होकर निज भाषा ग्रन्थ

लिखने का प्रयास करते हैं। कवि ने इस विशाल महाकाव्य को पूर्ण करने के लिए दस वर्षों तक कठिन साधना की। कवि मन जहाँ–तहाँ रमता गया, उसकी लेखनी चलती ही रही। कवि की रुचि आश्चर्यजनक है। वह आयुर्वेद का अच्छा ज्ञाता था। वह अपने इस ज्ञान के प्रसार का कोई भी अवसर गंवाना नहीं चाहता था। अतः उसने अपने मनोनुकूल जितना चाहा उतना लिखा। इसीलिए ग्रन्थ विस्तृत होता गया।

कवि ने सम्पूर्ण महाकाव्य को काण्ड में विभक्त न करके पथ नाम दिया हैं। पथों को विश्रामों में विभक्त किया गया है। इस प्रकार सम्पूर्ण सुसिद्धान्तोत्तम रामखण्ड रामायण में कुल सात पथ (काण्ड) और 408 विश्राम है। इसकी विशालता विश्रामों की वृहद संख्या से ही स्पष्ट हो जाती है। आधुनिक काल में रामचरित को लेकर इतना उत्कृष्ट महाकाव्य अभी तक नहीं लिखा गया।

रामचरित्र प्रतिपादन के लिए इसका अपना महत्व है। रामकथा के साथ–साथ यह अन्य विषयों से भी जुड़ा है। यह एक दुर्लभ ग्रन्थ है। हिन्दी में इस शैली का यह अद्‌भुत ग्रन्थ है। इसकी रचना के कारण कवि रुद्र प्रताप सिंह की मौलिकता, धीरता, और भक्ति भावना सराहनीय है।

¼ii½ *भारतेन्दु मण्डल के प्रमुख साहित्यकार पं0 सुधाकर द्विवेदी द्वारा सम्पादन और प्रकाशन 1911 में*

सुसिद्धान्तोत्तम रामखण्ड को राजा रुद्र प्रताप सिंह के पौत्र राजा राम प्रताप सिंह ने भारतेन्दु मण्डल के प्रमुख कवि एवं साहित्यकार, महामहोपाध्याय पं0 सुधाकर द्विवेदी से सम्पादित कराकर संवत् 1957–67 के मध्य प्रकाशित कराया।

स्वयं पं0 सुधाकर द्विवेदी ने भूमिका में लिखा है कि ''छत्रपाल सिंह जी के पुत्र सर्वगुण सम्पन्न वर्तमान समरविजयी महाराज श्री 108 राम प्रताप सिंह देव बहादुर जी हैं, जिनकी आज्ञा से मैने इस सुसिद्धान्तोत्तम रामखण्ड को यथा

बुद्धिशुद्ध कर दिया है। इस ग्रन्थ को शुद्ध करने में और त्रुटियों की पूर्ति करने में जो परिश्रम मुझे करना पड़ा और उसके जानने वाले एक बैकुण्ठवासी ग्रन्थकार श्री महाराज रुद्रप्रताप सिंह जी और दूसरे उनके सुयोग्य पौत्र वर्तमान माण्डा नगर नरेन्द्र समरविजयी महाराज श्री 108 राम प्रताप सिंह बहादुर हैं।''

संस्कृत के विद्वान पं0 सुधाकर द्विवेदी ने भूमिका में विस्तार से गहरवार वंश और भारतीय इतिहास का उल्लेख किया है। उन्होंने नीर क्षीर विवेकी की भाँति माण्डा नरेश के बारे में लिखते हुए कहा कि संसार में सब चलायमान है, एक सुन्दर कीर्ति ही अचल हो कर रहती है।

वे कहते हैं कि जो मनु, बाल्मीकि, व्यास इत्यादि ग्रन्थ न बना जाते तो आज तक उनकी कीर्ति संसार में कैसे वर्तमान रहती। किसी ने सच कहा है–

^^pyfpPpr pyf}Rr py/kkou;koueA
pykpyfen lo dhfÙk;L; l thofr**AA[1]

अन्त में पं0 सुधाकर द्विवेदी ने पाठकों, विद्वानों से विनय करते हुए कहा कि मेरे नेत्र या बुद्धि के दोष से या छापे के दोष से अशुद्धियाँ हो गई हों उन्हें शुद्ध करते समय इस ग्रन्थ को एक बेर आद्यन्त पढ़कर रामकथामृत का पान करें, मेरे परिश्रम को सुफल करें और महाराज माण्डा नरेश समरविजयी महाराज श्री 108 राम प्रताप सिंह बहादुर के उत्साह को सौ गुना बढ़ावें।

¼iii½ *विश्व प्रसिद्ध रामकथा पर आधारित काव्य*

राजा रुद्र प्रताप सिंह गुणग्राही, कवि और कुशल प्रशासक थे। उनके कार्यकाल में उत्तम कोटि के कवि, विद्वान और मनीषी दरबार में रहा करते थे। धार्मिक क्रियाकलापों में उनकी विशेष रुचि थी। उन्होंने रामकथा को लेकर वाल्मीकि रामायण तथा पुराणों के आधार पर एक विशाल ग्रन्थ 'सुसिद्धान्तोत्तम

1 रामखण्ड रामायण, राजपथ (उत्तरकाण्ड) की भूमिका, पृ0 11

रामखण्ड' की रचना की। यह ग्रन्थ विश्व प्रसिद्ध 'रामचरितमानस' (तुलसीदास) की भाँति ही दोहा, चौपाई तथा अन्य छन्दों की शैली में है।

रामकथा के क्रम में सभी चरित्रों का अपना विशेष महत्व है। सबको बैकुण्ठ की प्राप्ति होती है। सभी पात्र धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष से किसी न किसी मात्रा में सम्बद्ध है। इस कथा में देवचरित, मानव चरित्र, पशु–पक्षी चरित्र, देशचरित और असुर चरित के चित्रण हैं। सबको धार्मिक मर्यादा में रहने का संकेत है। कर्मों के फल को सभी भोगते हैं।

राम–चरित को लेकर अनेक राजाओं ने काव्य लिखने का उपक्रम किया लेकिन राजा रुद्र प्रताप सिंह की यह कृति मील का पत्थर है। आकार की दृष्टि से भी 'रामखण्ड रामायण' अन्य सम्राट कवियों के ग्रन्थों से विशाल है।

कवि राजा रूद्र प्रताप सिंह ग्रन्थ के आरम्भ में भरद्वाज, व्यास आदि कवियों का भी उल्लेख करते हैं। वंश–पथ के मंगलाचरण में वह इन कवियों का किंचित नाम स्मरण करते हुए प्रथम काव्य–कर्ता महर्षि वाल्मीकि की वन्दना करते हुए लिखते हैं–

Hkkj}kt C;klkfn fnC;dkC; vkpk;Z tsA
dsoy j?kqcjckfn lkfn rqjxcj dfcr dsAA
okYehfd eqfujkt izFke dkC; djrkj tsA
cqfn; lfgr lekt tsfg ds iFk dfcxr pyrAA[1]

^रामखण्ड रामायण' में रामनाम की महिमा और उसके सुन्दर फल को बार–बार कहा गया है। रामकथा में 'भागवत' तथा अन्य पुराणों के प्रमाण भी मूल रूप से दिये गये हैं। रामकथा में कवि माण्डा नरेश ने नीति, उपदेश, धर्मोपदेश और मंगल कामना के अनेक सुन्दर प्रसंग लिखे हैं। रामकथा में कर्मफल की लम्बी विवेचना की गयी है–

---

1 रामखण्ड रामायण, बालकाण्ड, सोरठा 8–9, पृ0 2

txdkju lkb txre; fcLooh t tx vkfnA
foLoknHko lr lfDr t lkb vkxr xr okfnAA
;g cãk.M xhr dN xk;A iio ifMru ikj u ik;AA
y?k/kh g dfg Hkkfr ljkgA eld tku ;g luk xkNAA
HkkuxkLy vc pgm ljkgA ftfe xt pgfg pUndj ykgAA
mMxu pgfg Nikdj Hkk lkA frfe gk ;nfi ygm migk lkAA
futeu ck/kkjFk ;fg HkkjofgA dkdg l xfr ftfe vfHkyk[kfgAA
j?k i xoe; e.My HknA ojuu dhUgm lfgr lugAA
ekjrM jFk fofon ijkukA vd lgl tktu ifjekukAA
b[knM fNxu rfg tkuA =;h l) lieku ijkuAAA[1]

'सुसिद्धान्तोत्तम रामखण्ड' में राम को बार–बार अज, अखण्ड और अद्वैत तथा अभेद कहा गया है। जो रामकथा को सुनता है–वह मुक्ति को प्राप्त करता है। राम कृपा से ही अयोध्या का वास तथा साकेत की प्राप्ति हो पाती है। रामकथा में अन्य तीर्थों की भी दशा प्रसंग महिमा गायी गयी है।

कवि ने परम्पराओं का अधिक ध्यान दिया है। बालकाण्ड के प्रारम्भ में ही उसने कह दिया है कि वाल्मीकि तथा अन्य पुराणों के अनुसार मैं कथा कह रहा हूँ। अनेक पौराणिक आख्यानों तथा पूर्व रामकथाओं को कवि ने सादर प्रस्तुत किया है। वाल्मीकि के साथ उसने तुलसीदास और अध्यात्म रामायण का भी ध्यान रखा है।

इस प्रकार भारतीय वाङमय में फैली हुई रामकथा को कवि ने समेटने का सफल प्रयास किया है।

(iv) महाकाव्य का नौ अध्यायों में विभाजन

---

1 रामखण्ड रामायण, बालकाण्ड, दो0 288, चौ0 1–8, पृ0 122

सुसिद्धान्तोत्तम–रामखण्ड महाकाव्य को महाकवि ने 7 पथों या काण्डों में विभाजित किया है। किन्तु यह पुस्तक रूप में 9 जिल्दों में स्थूलाक्षरों में मुद्रित है। राजा राम प्रताप सिंह हिन्दी प्रेमी तथा स्वयं कवि भी थे। इस ग्रन्थ का उन्होंने रामभक्तों के मध्य निःशुल्क वितरण कराया। इसका मुद्रण भी वैज्ञानिक विधि से नहीं है। अतः इसका रखरखाव अत्यन्त कठिन है। किन्तु आज भी माण्डा में अनेक घरों में इसका पाठ होता है।

सम्पूर्ण महाकाव्य में लगभग 4000 पृष्ठ और 408 विश्राम (सर्ग) हैं। प्रत्येक पृष्ठ में 20 पंक्तियाँ, औसतन 96 अर्धाली और दो दोहे हैं। यह कथा रामकथा के साथ–साथ कवि–वंश की भी कथा है। राम कथा का स्वरूप भी जन्म से स्वर्गारोहण या जलसमाधि तक है।

सुसिद्धान्तोत्तम रामखण्ड महाकाव्य की भूमिका में महाकवि (रचनाकार) ने तुलसीदास को स्मरण किया है। उनके साथ वाल्मीकि और व्यास आदि को भी कवि ने स्मरण किया है।

इस महाकाव्य को इस प्रकार देखा जा सकता है–

1. मिथिलापथ (बालकाण्ड)– प्रथमखण्ड मिथिलापथ में सर्वप्रथम वंश वर्णन किया गया है। त्रिमार्गखण्डन और मण्डन है। त्रिभुजनारायण का वर्णन, श्वेतद्वीप वर्णन, रामनाम प्रशंसा, शक्ति वर्णन, पुरुष वर्णन, रामसहस्र नाम वर्णन, सूर्यवंशी राजाओं का वर्णन और अयोध्या का विस्तार से वर्णन है। वैवस्वत अभिषेक और सरस्वत्यागमन वर्णन है। सूर्यवंशीय राजाओं के वर्णन के साथ भरतखण्ड का विस्तार से वर्णन है। जम्बूद्वीप भूगोल, खगोल वर्णन किया है। ज्योतिश्चक्रनिरूपण और दशरथ की कथा है। ब्रह्मावर्त सृष्टि का वर्णन तथा क्षत्रिय वंशानुकीर्तन है। यदुकुलनिरूपण, कंसादिवध और रूक्मिणी विवाह का विस्तार से वर्णन है। सुन्दर बिम्बविधान हैं। पंचाल वंशानुकीर्तिन है। चन्द्रवंश वर्णन और अभिमन्यु विवाह तथा कृष्ण अनुकीर्तन है। अर्जुन के भी वंश का वर्णन किया गया है। कृष्ण अनुकीर्तन

के अन्तर्गत पाण्डव चरित्र का वर्णन है। रावण–विजय तथा कश्यप तप परीक्षा का वर्णन है। दशरथ को पुत्र के लिए यज्ञ करने के हेतु सुमन्त के समझाने का वर्णन है। पुत्र के लिए यज्ञ करना, देवताओं का आह्वाहन, शंकर जी का वरदान देना तथा चरू भाग रानियों को देना इत्यादि का वर्णन है। बंधु सहित रामावतार वर्णन। राम जी के संस्कार का वर्णन विस्तार से किया गया है। विश्वामित्र जी का यज्ञ की रक्षा के हेतु राम लक्ष्मण को माँगना तथा ताड़का वध का वर्णन। श्रीराम का धनुर्वेद पढ़ना, अहिल्या उद्धार का वर्णन। राम लक्ष्मण का विश्वामित्र के साथ मिथिला में प्रवेश। श्रीराम और विश्वामित्र का रंगभूमि में प्रवेश, धनुष की उत्पत्ति की कथा का वर्णन और राम जी द्वारा धनुषभंग किया जाना। श्रीराम के गले में सीता का जयमाल डालना। राम सीता विवाह हेतु दशरथ के यहाँ दूत भेजना। दशरथ का मिथिला जाना। मिथिला में बारात सहित दशरथ का आना। जनक द्वारा सबके लिए भोज्य भेजना और जनक के वंश का विस्तार से वर्णन है। राम और उनके भाइयों के विवाह का वर्णन है। श्रीराम को दहेज देकर विदा करने का वर्णन है। परशुराम जी का आगमन तथा सत्य का भान होने पर गर्व का शमन वर्णन है। इस पथ के अन्त में दशरथ का पुत्रों सहित अयोध्या में प्रवेश तथा स्वागत वर्णन है। इस प्रकार इस काण्ड की कथा 47 विश्रामों में वर्णित की गयी है।

2. कोशलपथ (अयोध्याकाण्ड)– इस पथ के प्रारम्भ में नारद जी के आगमन का वर्णन है। राम के अभिषेक की सामग्री का संकलन। कुबरी मंथरा राम वनवास की याचना कैकेयी से करती है। कैकेयी का कोपागार में प्रवेश करना। दशरथ का कैकेयी रानी के पास जाना और वरदान माँगने का प्रस्ताव रखते हैं कैकेयी की याचना सुनकर दशरथ विलाप करने लगते हैं। सुमन्त जी राजा के घर जाकर अभिषेक के मुनियों के आगमन की सूचना देते हैं। कौशल्या और सीता को राम समझाते हैं। लक्ष्मण जी पश्चाताप करते हैं। दण्ड कवच और

रामकवच का विस्तार से वर्णन है। सीता जी के साथ राम दशरथ के पास जाते हैं। कैकेयी चीर दान देकर राम के लिए वन जाने को कहती है। वशिष्ठ जी इस बात की निंदा करते हैं। सीता जी भोजाम्बर धारण करती है।

राम–सीता और लक्ष्मण जी दण्डक वन को प्रस्थान करते हैं। प्रजा विलाप करती है और राजा दशरथ को महान कष्ट होता है। कौशल्या का विलाप और तमसातीर जाकर पुरवासियों का विलाप। राम तमसा के तट पर पुरवासियों को छोड़कर वे श्रंग्वेरपुर में रुकते हैं। निषाद का प्रेम से स्वागत करना। राम का तपस्वी का वेश धारण करना। राम केवट की नाव से गंगा को पार कर सीता और लक्ष्मण के साथ प्रयाग में प्रवेश करते हैं। प्रयाग के महात्म्य का वर्णन विस्तार से है। सभी भारद्वाज जी के दर्शन करते हैं। राम का चित्रकूट दर्शन। राम का वाल्मीकि के आश्रम में जाना। पर्णकुटी बनाकर चित्रकूट में निवास करना। चित्रकूट से सुमन्त का अयोध्या वाप आना। कैकेयी से दशरथ का अंधशाप कहना और दशरथ की मृत्यु होने का विस्तार से वर्णन है। रानियों और प्रजाओं के रोने का वर्णन तथा दशरथ के पार्थिव शरीर को तैलद्रोण में रखने का भी वर्णन है। भरत जी ननिहाल से वापस आते हैं। शत्रुघ्न के साथ भरत विलाप करते हैं। भरत जी को न लेने की शपथ लेते हैं। भरत राजा दशरथ का अन्तिम संस्कार करते हैं। भरत का राज्य न लेने के मंत्रियों से विवाद होने का वर्णन है। भरत प्रजा के साथ राम को वापस लाने के लिए वन जाते हैं। निषाद–भरत का संवाद होता है। इस प्रकार अनेक प्रासंगिक कथाएँ हैं– अकम्पन नारदोषाख्यान, मत्यूत्पत्ति कथन, भरत और सुमन्त का संवाद, भार्गवगुणोपाख्यान आदि। भरत का भारद्वाज आश्रम को जाना। भारद्वाज द्वारा भरत का आदर सत्कार वर्णन। भारद्वाज द्वारा भरत को चित्रकूट का दर्शन कराना। राम को खोजते हुए भरत आगे बढ़ते हैं। भरत राम को पर्णकुटी में देखकर दुखी होते हैं। राम जी भारत को राजनीति समझाते हैं। रामकृत राजनीति का वर्णन है। दशरथ की मृत्यु को सुनकर राम विलाप करते हैं। राम के अयोध्या वापसी के लिए भरत विनती करते

हैं। राम भरत को समझाते हैं। चार्वाक के मत का वर्णन है। भरत निराहार रहकर कुश आसन पर सोते हैं वे राम की पादुकाएँ लेकर वापस लौटते हैं। भरत नंदिग्राम में निवास करते हैं। राम के अनुसुइया तथा अत्रि के आश्रम में जाने का वर्णन है। देशभूमि के माहात्म्य का विस्तार से वर्णन हैं इस प्रकार इस काण्ड में भी 47 विश्राम हैं।

3. अटवीपथ (आरण्यकाण्ड)–विराध के स्वर्ग जाने का वर्णन सबसे पहले है। तत्पश्चात् शरभंग ब्रह्मलोक को जाते हैं। राम सुतीक्षण के आश्रम में जाते हैं। राम के गौतमीतीर में रहने का वर्णन है। राम–लक्ष्मण के संवाद में मोक्ष वर्णन है। अशिष्टता के कारण सूर्पणखा के नाक–कान का लक्ष्मण के द्वारा काटा जाना। सेना के साथ राम द्वारा खर, दूषण का विनाश होना। अकम्पन तथा सूर्पणखा का रावण से संवाद का वर्णन विस्तार से किया गया है। रावण की मारीच से संवाद सीता हरण तथा राम को मारने के लिए होता है। मारीच न चाहते हुए भी भय से उसके इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लेता है। अन्त में मारीच वध होता है। रावण का सीता जी से लम्बा संवाद होता है। अन्ततः सीता का छायामय हरण हो जाता है। जटायु का रावण से प्रतिरोध करते हुए मारा जाना। सीता जी का विलाप करना। सीता जी के लंका के अशोक वन में रहने का शोक वर्णन है। राम–लक्ष्मण के आश्रम में आगमन पर सीता न मिलने के कारण राम विलाप करते हैं। वे लोग सीता की खोज करने लगते हैं। गोदावरी नदी के निकारे वे विलाप करने लगते हैं। जटायु को सारूप्यमोक्ष की प्राप्ति हो जाती है। सीता को खोजते हुए राम कवन्ध को गति प्रदान करते हैं। तत्पश्चात् राम शबरी के आश्रम में जाते हैं। राम शबरी को मोक्ष प्रदान करते हैं। यह कथा यहीं पर 27 विश्रामों के साथ समाप्त होती है।

4. किष्किन्धापथ पूर्वार्ध– अटवी पथ के पश्चात् आगे की कथा में राम शबरी के आश्रम के बाद पंपाशर की ओर जाते हैं। राम की मित्रता सुग्रीव से

होती है। सप्तताल का राम ध्वंश कर देते हैं–जिससे बालि वध की सम्भावना प्रतीत होती है। तब बाद में बालिवध होता है। सुग्रीव को राज्य प्राप्त होता है। राम प्रवर्षण पर्वत पर वर्षा ऋतु में निवास करते हैं। वर्षा ऋतु में सीता के लिए विलाप करते हैं। इसके बाद इस काण्ड में अनेक प्रसंग आते हैं। जैसे आहिक व्यवहार, उर्द्धवपुण्ड विधान, संध्या कथन, जपहवन अभिवादन, वेदों का अभ्यास, तर्पण विधि, देवयज्ञ निरूपण, अगस्त्यसुतीक्ष्णाश्रम गमन, राम रहस्य निरूपण, तारकमाहात्म्य वर्णन, मस्करीमार्ग वर्णन, तुलसीमाहात्म्य वर्णन, मन्त्रराज वर्णन, रामयंत्र निरूपण, पीठ पूजा, भूतशुद्धि वर्णन, श्रीराम पूजा रहस्य वर्णन, कुण्ड निर्माण, षट् प्रयोग वर्णन, पुश्चरण रहस्य वर्णन, गायत्री वर्णन, रहस्य वर्णन, यम नियम कथन आसन प्राणायाम आदि कथन, ब्राह्मी विद्यागान तथा गोपमुद्रिकाकरण, ब्रह्मविद्या निरूपण, रहस्य योग वर्णन, राम वर्णन, सीतामाहात्म्य वर्णन, राम महिमा, व्रत माहात्म्य रामव्रतराज वर्णन, सखाधर्मवर्णन, सखी रहस्य वर्णन रामव्रतराज वर्णन है।

यह कथा 46 विश्रामों के साथ समाप्त होती है।

किष्किन्धाकाण्ड के उत्तरार्ध का प्रथम खण्ड

इस काण्ड में रामकथा के साथ में रचनाकार ने अनेक प्रसंगों का भी वर्णन किया है। उदाहरणतः– परशुराम यशोवर्णन, सत्यनारायण कथा वर्णन, राममूर्ति स्थापना सीता के लिए राम का विलाप करना तथा लक्ष्मण का समझाना, हनुमानमंत्र प्रयोग वर्णन, जानकी मंत्र प्रयोग, हनुमानयंत्रवर्णन, मानसिक पूजा वर्णन संध्या समय का कर्म, परस्त्री संग पाप वर्णन, वैश्वदेवादि बलि कर्म, अतिथि पूजन विधि, भोजन–भोजनोत्तर कर्म, भोजन विवेक, छठवें, सातवें, आठवें प्रहर का कर्म, शयनविधि, राजाओं के विशेष कर्म राजधर्म, वैश्य और शूद्रों के धर्म, रामतीर्थ माहात्म्य, कुरुक्षेत्र वर्णन, ब्रह्मावर्त वर्णन और पश्चिम यात्रा वर्णन, रामतीर्थ का विशेष वर्णन, शुभ तीर्थों का वर्णन, तीर्थराज वर्णन, गंगा माहात्म्य, पुरियों का

माहात्म्य, अयोध्या का विशेष माहात्म्य, राजा नल की कथा, घोड़े के भेद और नाम, घोड़ों के दोष–गुण और नल–दमयन्ती संयोग, कर्कोदकोद्वार, नल का अयोध्या के राजा के यहाँ जाना और दमयन्ती का भीम के घर जाना, दमयन्ती का पुनः स्वयंवर का समाचार अयोध्या के राजा के यहाँ पहुँचाना। नलोपाख्यान–वर्णन, मधु–माधव व्रत निर्णय, ज्येष्ठा आषाढ़व्रत वर्णन, श्रावणभाद्रपद व्रत निर्णय, आश्विन कार्तिकव्रत निर्णय, मार्गशीर्ष पौषव्रत निर्णय, माघ–फाल्गुन व्रत निर्णय मलमास का विधान, एकादशी माहात्म्य, मलमास की एकादशियों का निर्णय, पथोव्रतादि वर्णन, षष्ठीव्रत विधान, शिशिराव्यथादिवर्णन, शरदशुद्धि वर्णन, रसायन वर्णन, तृणक्र्तादि चरित्र वर्णन, दश चरित्र वर्णन, सुदामान्त विशति चरित्र ववर्णनभगिनी मिलन, कृष्णोपाख्यान, बुद्धोपाख्यान, कल्क्यवतार निरूपण, कपिलोपाख्यान, विराट्स्वरूप निरूपण, सांख्य विद्या वर्णन, आत्मा स्वरूप निरूपण, सुभक्तियोग वर्णन, देहकर्म विपाक वर्णन, सांख्ययोग वर्णन, एकशत–चतुर्विंशततार वर्णन, रामविलाप वर्णन, हनुमत् कथन, रामपरिताप वर्णन, हनुमान का लक्ष्मण से कहना, रामपरिताप वर्णन, सुग्रीव–राम समागम, सीता ढूँढ़ने के लिए वानरों का पूर्व दिशा को जाना, पश्चिम दिशा का वर्णन, सीता को ढूँढ़ने के लिए चतुर्दिशा वानरेन्द्रगमन, हनुमत्प्रति राय प्रश्न, दक्षिणदिशि परिशोधन, कपिलप्रायोपवेशन, कपि संपाती का सीता को देखना, हनुमान का लंका गमन।

4. किष्किन्धाकाण्ड उत्तरार्ध द्वितीय खण्ड

इसमें विषय को बहुत अधिक बढ़ाया गया है। योग और वैद्य के सम्बन्ध में भी विस्तार से कहा गया है। विविध प्रकार के क्वाथों का वर्णन है। चरक आदि की कथा लिखी गयी है। विविध जड़ी–बूटियों और रसों तथा आयुर्वेदिक वनस्पतियों का वर्णन है। मूलकथा से इसकी संगति नहीं बैठती है। इसके बिना भी रामायण पूरी की जा सकती थी। पारद, गंधक आदि के गुण–दोष वर्णित हैं रसायन आदि का वर्णन हैं विश्राम 90 में कृष्णोपाख्यान में दशचरित्र वर्णन है।

अगले विश्राम में गोपीबल्लभ मान है। वृन्दावन विहार, चीरहरण, गोचारण, लकुटी कमरी आदि का वर्णन हे। कृष्णा–वल राम के गोकुल से मथुरा प्रयाण की कथा है। अक्रूर जी दोनों को ले जाते हैं। सुदामा की भी कथा है। इस प्रकार सुदामान्त नामक 91वाँ विश्राम पूरा है। अगले विश्राम में कुब्जा और कृष्णा की कथा है। कुबरी की कथा पारम्परिक व पौराणिक है। मथुरा की कथा विस्तार से है। युद्ध लीला का सजीव चित्रण है। कालयवन का आक्रमण मथुरा पर होता है, कृष्ण ने उसका अकेले सामना किया। वे भागने लगे और कालयवन उनका पीछा करने लगा। कृष्ण मुचुकुन्द की गुफा से होकर बाहर चले गये, अपना दुपट्टा उन पर डाल दिया। कालयवन ने मुचुकुन्द को कृष्ण समझकर उन पर पद प्रहार किया। मुचुकुन्द की निद्राभंग हुई और उनके दृष्टिपात करते ही कालयवन जलकर भष्म हो गया। इस प्रकार इतने बड़े अभियान को कृष्ण ने एक चाल से विफल कर दिया। पाण्डवों की भी विजय कथा है। जरासंध का वध कृष्ण की चाल से भीम ने किया। रुक्मिणी अपहरण का वर्णन है। श्यमन्तकमाणि और सत्राजीत की कथा है। उसकी पुत्री सत्यभामा और जामवन्त की पुत्री जामवन्ती का विवाह कृष्ण से होता है। आगे वाणासुर संग्राम भी है। प्रौंडक की कथा है। महाभारत के युद्ध की भी झलक है। श्रीकृष्ण का कुरुक्षेत्र में गोकुल–वृन्दावन के लोगों से मिलने का प्रसंग भी है। कल्कि अवतार की कथा है।

पद्मिनी की कथा राजा और अलाउद्दीन खिलजी की लड़ाई का वर्णन है। लम्बे–लम्बे उपदेश और उद्धरण हैं। भक्ति की महत्ता सर्वत्र है। आत्म तत्त्व विवेचन है। बुद्धि, अहंकार आदि का वर्णन है। कपिल का आख्यान विश्राम 96 में है। आत्म स्वरूप विरूपण नामक 99वाँ विश्राम है। अगले विश्राम में योग पर प्रकाश डाला गया है। इससे कवि की बहुज्ञता प्रमाणित होती है परन्तु प्रासंगिकता अव्यवस्थित हो जाती है। इसके लिए अलग से पुस्तक लिखी जा सकती थी। आगे देहिकर्मविपाक का वर्णन है। 24 अवतारों का वर्णन है।

राम सुग्रीव पर क्रोध करते हैं। यहाँ कथा सीधे रामकथा से जुड़ती है। राम का सीता वियोग वर्णित है। विश्राम 104 राम विलाप का है। सुग्रीव अपने भोग विलास में राम के कार्य को भूल जाता है। जब राम को क्रोध आता है तो वह क्षमा याचना करता है। यहाँ अवसरवादिता की निन्दा की गयी हैं राम का विरह बड़े विस्तार से वर्णित है। अनेक संयोग के दृश्यों को देखकर उनका वियोग और बढ़ जाता है। इधर सुग्रीव अबाध गति से भोग–विलास करता है। लक्ष्मण कुंठित होकर सुग्रीव के महल में जाते हैं। राम को किसी भी प्रकार से संतुष्ट करने के लिए वह उपाय करता है। हनमान जी का लम्बा बयान होता है। अन्त में सीता खोज के लिए बन्दर, भालू आदि चल पड़ते हैं। सब लोग दक्षिण दिशा की ओर प्रस्थान करते हैं वे अनेक भू–भागों को पार करते हैं। देश और नगरों के सुन्दर चित्रण हैं। किन्नर देश व कुबेर की नगरी का अद्भुत वर्णन है। वास्तुकला, चित्रकला, सौन्दर्य निरूपण और सीता–खोज के लम्बे प्रयासों का यहाँ वर्णन है। विस्तृत प्रकृति चित्रण हैं यत्र–तत्र पुनरुक्ति दोष भी है। धर्म, नीति, राम और रामभक्तों के पूर्व कर्मों का उल्लेख है। गीध संपाती की कथा है– जो जटायु का भाई है। राम का ब्रह्म और उद्धारक रूप बार–बार स्मरण किया गया है। प्रासंगिक कथाओं को बहुत विस्तार दिया गया है। अन्त में हनुमान लंका को प्रयाण करते हैं।

> lfej ân; j?kukFk gueku v tfuru;A
> tkrHk, eu lkFk ydk jkPNl /kkfu fdyAA
>
> jke lkn ?kuL;ke ru fl; lmnkfefu tkfuA
> pkrd :nirki bo pkgr ie lqikfuAA[1]

इस काण्ड की कथा यहीं विश्राम लेती है।

5. दूतपथ (सुन्दर काण्ड)

1 रामखण्ड रामायण, किष्किंधाकाण्ड उत्तरार्ध द्वितीय खण्ड, सो0 351, दो 2885

इस पथ में सबसे पहले हनुमान जी का सागरलंघन का वर्णन है। अनेक वीरों में से हनुमान जी ने लंका जाकर सीता को खोजने का निश्चय किया। अनेक बाधाओं को नष्ट करते हुए पवन सुत लंका में प्रवेश करके सीता जी का अन्वेषण करने लगते हैं। वे अशोकारण्य का दर्शन करते हैं। हनुमान और रावण संवाद है। रावण अपने हठ से नहीं हटता है। वह अपने सदन में चला जाता है। त्रिजटा एक लम्बा स्वप्न देखती है– जिसमें लंका के विनाश का दृश्य था। आगामी घटनाओं तथा फलागम की इससे सूचना मिल जाती है। हनुमान जी असजमंजस में पड़ जाते हैं। सीता और हनुमान का लम्बा संवाद चलता है। सीता को हनुमान जी के कथन पर विश्वास हो जाता है। सीता विज्ञानदान का वर्णन है। हनुमान जी रावण के अशोक वन को उजाड़ने लगते हैं, उनको पकड़ने के लिए रावणी सेना चलती है। हनुमान जी अक्षय (रावण–पुत्र) का वध करते हैं। अन्त में हनुमान जी को ब्रह्मपाश में बांध दिया जाता है। हनुमान और रावण संवाद पुनः होता है। हनुमान जी मंगल के लिए उपदेश करते हैं, परन्तु कोई फल नहीं निकलता है, पुच्छल तारा दिखायी पड़ता है। लंकापुरी का दहन हनुमान जी करते हैं, उनका रावण से संवाद होता है। तदुपरान्त उनका सीता जी से पुनः संवाद होता है। सीता के पातिव्रत धर्म का विस्तार से वर्णन है। इसके उपरान्त हनुमान जी द्वारा मधुवन भंग की कथा है। अन्त में वानरोत्कर्ष और कविकुल की कथा है। यह पथ (काण्ड) भी 27 विश्रामों में पूर्ण हो गया है।

6. युद्ध पथ (लंकाकाण्ड)

इस पथ के प्रारम्भ में राम की सेना का महाप्रयाण है। सेना समुद्र के किनारे आकर स्थिर हो जाती है। विभीषण अपना वक्तव्य देता है, परन्तु रावण उसकी उपेक्षा करता है। अपमानित होकर वह राम से मिलता है। समुद्र को पार करने की समस्या राम के सामने आती है। समुद्र से वे मार्ग मांगते हैं, परन्तु वह कुछ नहीं सुनता है। जब राम उसको सुखाने की बात करते हैं, तो वह प्रार्थना करने लगता है। अन्त में उस पर बाँध बाँधने का विचार किया जाता है। समुद्र

बंधन की कथा विस्तार से है। जब समुद्र पर बाँध बाँधने का समाचार रावण को मिलता है, तो वह आश्चर्य व्यक्त करता है, उसको विश्वास नहीं होता है। सेनाओं का अलग–अलग वर्णन है, वानर कुल का वर्णन है। अंगद दूत बनकर रावण के पास जाता है, परन्तु रावण की मति विपरीत ही बनी रहती है। वह सीता को वापस करके राम से क्षमा माँगने के लिए तैयार नहीं होता है। रावण मूर्च्छित हो जाता है। सर्मा और सीता से संवाद होता है। रावण युद्ध के लिए व्यूह बनाने लगता है। प्रहस्त और रावण का संवाद होता है। आगे महासंग्राम की कथा चलती है। मंदोदरी–रावण संवाद चलता है। मंदोदरी रावण को बार–बार समझाती है कि सीता को वापस करके राम से क्षमा–याचना कर लीजिए, रावण अपने हठ को नहीं छोड़ता है। सेनाओं में भयंकर मारकाट होता है। संजीवनी से सबको राहत मिलती है। सीताजी इन समाचारों से दुखी होकर विलाप करती है। गरुड़ आते हैं, तो सब को सर्प बंधन से मुक्ति दिलाते है। संग्राम पुनः प्रारम्भ हो जाता है। धूम्रपान वध की कथा है। तदुपरान्त अकम्पन और प्रहस्त का वध होता है। मंदोदरी रावण को राम से न लड़ने के लिए पुनः आग्रह करती है। रावण सेनाओं का व्यूह बनाकर राम से भयंकर युद्ध करता है। लक्ष्मण को शक्ति लगती है, रावण भी मूर्च्छित होता है। लक्ष्मण एक लम्बे प्रयास के उपरान्त चैतन्य होते हैं। कुम्भकर्ण अपनी निद्रा को छोड़कर लड़ने के लिए युद्धभूमि में आता है। उसके युद्ध–प्रयाण का बड़े विस्तार के साथ वर्णन हैं। युद्ध में उसकी नाक और कानों को काट लिया जाता है– फिर उसके वध की कथा है। रावण को मंदोदरी समझाती है और असुर विलाप करते हैं। नारान्तक, सुरान्त्रक, त्रिशिदा, महोदर, महापार्श्व और अतिकाय के मरने के उपरान्त मेघनाद के युद्ध का वर्णन है। लंकादहन की कथा है, इसके साथ रावण के अनेक योद्धाओं का वध होता है। मेघनाद राक्षसी विद्या की सिद्धियों के अनेक चमत्कार करता है। वह आकाश में चला जाता है, फिर उसके वध की कथा है। राक्षस दल भागने लगता है। सेना के मरने की लम्बी कथा है। अनेक वीर दोनों ओर से मारे जाते हैं। युद्ध भूमि का

हाहाकार अत्यन्त भयावह है। लक्ष्मण शक्ति से छूटते हैं। फिर मारकाट प्रारम्भ हो जाता है। रामचन्द्र भी शक्ति से छूट जाते हैं। दिव्य लोक से रथ आता है। राम रथारूढ़ होकर रावण से युद्ध करते हैं। अन्त में रावण मारा जाता है। लंका का राज्य विभीषण को दिया जाता है। तदुपरान्त रावण का अन्तिम संस्कार होता है। विभीषण का लंकापति के रूप में राज्याभिषेक होता है। सीता को विधिवत सन्देश दे दिया जाता है। उनका श्रृंगार होता है। सीता–राम से मिलने की लम्बी कथा है। सीता को अग्नि से शुद्ध किया जाता है। देवतागण रामचन्द्र की बार–बार स्तुति करते हैं। देवताओं के साथ ब्रह्मादिक भी रामचन्द्र की स्तुति करते हैं। विभीषण लंकापति होकर राम के पास आता है। लक्ष्मण जी सुग्रीव से विशेष रूप से मिलते हैं। वानर रामचन्द्र के हाथों से सत्कार पाते हैं। सभी लोग लंका से अयोध्या के लिए प्रस्थान करते है। भरत आदि से एक लम्बे अन्तराल के उपरान्त लोग मिलते हैं। मिलन समारोह का वर्णन विस्तृत और सजीव है। राम का राज्याभिषेक होता है। कैकेयी मौन रूप से सब कुछ देखती है। उस पर लोग व्यंग्य भी करते हैं। रामचन्द्र की शोभा का वर्णन अद्‌भुत है। नर, किन्नर और देवगण उनकी भूरि–भूरि स्तुतियां करते हैं। ऋषि आदि आकर उनकी स्तुति करते हैं। निषाद, विभीषण, हनुमान ओर सुग्रीव आदि स्तुति करके अपने–अपने देश चले जाते हैं। अंगद स्तुति करके राम का आशीर्वाद प्राप्त करकें किष्किंधा के युवराज के रूप में वापस चले जाते है। देश–देश के नाना भूपति राम का स्वागत सम्मान करते हैं। रामराज्य के धर्म का वर्णन बड़े विस्तार से किया गया है। इस कथा को पढ़ने और सुनने के फल का भी वर्णन है।

7. राजपथ (उत्तर काण्ड)

इस पथ के प्रारम्भ में राम राज्यनीति का वर्णन है। कुशध्वज के साथ राजा जनक अयोध्या में आते हैं। श्रीराम हेमन्त में अहेर खेलते हैं। शिशिर ऋतु में वे विहार करते हैं। बसन्त ऋतु का भी उनका विहार वर्णन है। राम के पास अगत्स्य ऋषि आते हैं और अनेक कथाएं सुनाते हैं। नवधा भक्ति की कथा है।

चार प्रकार की भक्तियों का विधिवत वर्णन है। भक्ति, ज्ञान और नीति की बातें प्रारम्भ में अधिक हैं। यज्ञ से पृथ्वी को शुद्ध किया जाता है। अश्वमेघ यज्ञ का घोड़ा छोड़ा जाता है। घोड़ा च्यवन ऋषि के आश्रम में जाता है, च्यवन ऋषि की कथा का भी विस्तार से वर्णन है। नीलगिरि वर्णन और पुरुषोत्तम महात्म्य, चक्रांक की लड़ाई और राजा चक्रांक का प्रताप आगे काल के आगमन की कथा है। काल सब को बांधता है, स्थूल को विशेष रूप से काल ऋषि के रूप में आता है। दुर्वासा ऋषि राजद्वार पर आते हैं। वे राम को देखने की इच्छा व्यक्त करते हैं। लक्ष्मण द्वारपाल के रूप में थे। उन्होंने ऋषि से कुछ देर के लिए रुकने को कहा। ऋषि क्रोधित होते हैं। वे कहते हैं कि यदि तुम नहीं मिलाते तो मैं तुम्हारे कुल का नाश कर दूँगा। राम ने लक्ष्मण का प्रवेश निषेध किया था, पर इस दशा में उन्होंने जाने का निर्णय लिया। राम ने उनको देखकर शोक किया। लक्ष्मण को त्यागने पर राम अपने जीवन को व्यर्थ बताते हैं। वे वशिष्ठ आदि से परामर्श लेते हैं। लक्ष्मण सरयू नदी में जाकर जल समाधि ले लेते अथवा प्राणोत्सर्ग करते हैं। इस प्रकार लक्ष्मण साकेत प्रयाण करते हैं।

इस घटना से राम शोकाकुल हो जाते हैं। वे राज्य छोड़ने का विचार करते हैं। कुश को गद्दी देने का वे विचार करते हैं। वे आसमुद्र पृथ्वी के हजारों वर्ष तक राजा रहे। दक्षिण कोशल के राजा कुश और उत्तर कोशल के राजा लव हुए। कुश ने कुशावती नगरी बसायी। विन्ध्य प्रान्त उनका ही राज्य था। उत्तर कोशल की राजधानी श्रावस्ती बनी। इसके उपरान्त राम साकेत धाम जाने की तैयारी करने लगते हैं। मथुरा आदि का राज्य शत्रुघ्न के पुत्रों को सौंप दिया गया था। राम प्रयाण का समाचार सुनकर सभी लोग दूर–दूर से अयोध्या आने लगते हैं। किष्किंधा और लंका से भी लोग आये। सब लोग राम के साथ जाना चाहते थे। राम ने सबको मना किया तथा सुग्रीव से अंगद को राज्य देने के लिए कहा।

राम की कीर्ति का वर्णन है। कृति के महत्व का भी वर्णन है। पुराण शैली में कथा–श्रवण का महत्व वर्णित है। सुबाहु के युद्ध की कथा है। सभी राजा

हारते जाते हैं। यज्ञ का घोड़ा तेजसपुरी में जाता है और विधुन्माली का नाश होता है। वीरमणि की लड़ाई का वर्णन है। महादेव के आगमन की कथा विस्तार से है। शौनक की कथा है। घोड़ा खेमे में बांधा जाता है। महिवंश की कथा है, राजा सुरथ की कथा है। घोड़ा घूमता हुआ ब्रह्मावर्त से अयोध्या में पहुँचता है। घोड़े के घूमने की लम्बी कथा है। जानकी जी का प्रसंग, लवणासुर का युद्ध, शत्रघ्न का अयोध्या वापस आना, सनकादियों का जीवनमुक्त कथा, सिद्धान्त व नीति प्रतिपादन, राजधर्म वर्णन, सीता की कथा, लक्ष्मण के पुत्रों को राज्य देना और अयोध्या से जाने की कथा है। कुश लव को राज्य देना, राम का परमधाम जाना, कुशवंश वर्णन, रामकीरति वर्णन, हिन्दू राजाओं की वंशावली है, काशीराज का वंश वर्णन है। चन्द्रवंशी जयचन्द की कथा है। पृथ्वीराज और जयचन्द की लड़ाई की कथा है। दिवोदास के वंश का वर्णन है। युधिष्ठिर से विक्रम तक का राज्य वर्णन है। उज्जयिनी और धारापुर के राजाओं का वर्णन है। गंधर्व राजाओं का वर्णन है। नीति और धर्म की विविध कथाएं हैं।

सबसे मार्मिक और रोमांचक कथा है जब राम के अश्वमेघ यज्ञ के घोड़े को लव कुश बांध देते हैं। राम दल से उनका विकट युद्ध होता है। अन्त में राम को भी सामने आना पड़ता है। उन बालकों को कोई जीत नहीं पाता है। अन्त में सब का परिचय और अयोध्या वापसी होती है। इसके साथ राम के परमधाम या साकेत धाम जाने की भी विचित्र कथा है। कथा को व्यापक रूप दिया गया है। राम को परमहंस ही प्राप्त कर सकता है। इस दशा में अपने पराये का भेद नहीं रहता है। साधक जगत् को आत्ममय देखता है। चारों कुमारों को पुरुषोत्तम का अवतार माना गया है। इसी के साथ भरत–गन्धर्व विजय की कथा भी है।

कवि ने अपने वंश का वर्णन बड़े विस्तार से किया है।

चन्द्रवंश के वर्णन में पाण्डवों का भी वर्णन है। कवि चन्द्रवंश का ही है। भारत के विविध बादशाहों का वर्णन है। अंग्रेजी सरकार की नीति की प्रशंसा कर दी गयी है। राजा माधव के रास के भी प्रसंग है। वैष्णवों के विविध रूपों का

वर्णन है। प्रमुख चार प्रकार के वैष्णव पथ कहे गये हैं। इनके साथ शैव, शाक्त और गजानन के उपासकों का भी वर्णन है। इनके अनेक भेदों भेद हैं। इस प्रकार 55 विश्रामों का यह उत्तरकाण्ड है।

¼v½ ***कथ्य एवं शिल्प की दृष्टि से विलक्षण***

राजा रुद्रप्रताप सिंह ने रामकथा को लेकर वाल्मीकि रामायण तथा अन्य पुराणों के आधार पर 'सुसिद्धान्तोत्तम रामखण्ड' की रचना की थी। यह ग्रन्थ 'रामचरितमानस' की भाँति ही दोहा चौपाई तथा अन्य छन्दों की शैली में है, किन्तु विषय विस्तार तथा कथाक्रम के शिल्प की दृष्टि से पुराणों से मेल खाता है। अतः इसे हिन्दी का महापुराण कहना चाहिए।

इस ग्रन्थ का महत्व भाषा की दृष्टि से भी है। मांडा ऐसा स्थान है, जहाँ रीवां की बुन्देलखण्डी, अवधी और मिर्जापुर की भोजपुरी की संधि भाषा का जन्म होता है, जिसका प्रयोग 'सुसिद्धान्तोत्तम रामखण्ड' में हुआ है–

^^lkvr u=Ug l|[k fcfgr tkfxr u; fnx HkiA
C;Dr dki l|ilkn nkm ;g jktUg d : iAA**[1]

vofl fulkpj tkfg fcykbA r|e le djdl Hkifg ikbAA
cf)jfgr fut&xk&vk/khukA fdfe ufg gkbl vl|j cyghukAA[2]

वास्तव में यह ग्रन्थ महापुराण ही है। यह बात 'सुसिद्धान्तोत्तम–रामखण्ड' को पढ़ने के पूर्व इसकी विषयानुक्रमणिका देखने से ही स्पष्ट हो जाती है। जो कि रामखण्ड के मिथिलापथ (बालकाण्ड) में दी हुई है। संस्कृत में पुराणों की विशेषता बताते हुए लिखा गया है–

---

1 सुसिद्धान्तोत्तम रामखण्ड, अरण्यकाण्ड, दो0 168, पृ0 79
2 सुसिद्धान्तोत्तम रामखण्ड, अरण्यकाण्ड, दो0 217, चौ0 1–2, पृ0 101

^^lx'p ifrlx'p o'kh eUoUrjkf.k pA
o'kkupfjr pio ijk.k ipy{k.keAA**[1]

अर्थात् सृष्टि, सृष्टि का विस्तार, लय तथा पुनः सृष्टि, सृष्टि आदि की वंशावली, मन्वन्तरों और उनमें होने वाली प्रधान घटनाओं का वर्णन तथा वंशानुचरित सूर्य तथा चन्द्रवंशी राजाओं का वर्णन–पुराणों के प्रतिपाद्य यही पांच विषय हैं। किन्तु महापुराण की संज्ञा से अभिहित होने वाले पुराण विषय की इस सीमा के अंदर ही नहीं बधे हैं। विषयों की विशदता और अधिकता के कारण वे महापुराण सम्पूर्ण ज्ञानकोष की मूर्तिमान राशि हैं। विषयों की इसी विशदता के कारण 'सुसिद्धान्तोत्तम रामखण्ड' भी महापुराण की कोटि में आता है।

मिथिलापथ (बालकाण्ड) में ही सर्ग, प्रतिसर्ग, मन्वन्तर आदि सृष्टि, वंशानुचरित, भूगोल और खगोल की विस्तृत भूमिका के साथ कथा–प्रबन्ध का प्रारम्भ होता है। राजपथ (उत्तरकाण्ड) के वंशानुचरित में सूर्य और चन्द्रवंशी राजाओं की सीमा तक ही न रहकर राजा रुद्रप्रताप सिंह ने दिल्ली के ऐतिहासिक सभी वंशों का वर्णन प्रस्तुत किया है। किष्किंधापथ (काण्ड) में आयुर्वेद का सम्यक् वर्णन, स्थान–स्थान पर अवान्तर कथाएँ, भक्ति, पूजा, यज्ञ, मंत्र, तंत्र, तीर्थों, श्राद्धों के विस्तार सहित वर्णन तथा दार्शनिक मतों के विवेचन भी उपलब्ध हैं। साथ ही जो चरित वर्णन किया गया है उसमें भी विषय का संकोच नहीं है। राजपथ (उत्तरकाण्ड) में रामाश्वमेघ, राम का परम धाम गमन आदि के अतिरिक्त रावण आदि का जन्म और उसकी विजय की कथाएं संवाद प्रसंग में कही गयी हैं। तुलसीदास के परवर्ती राम साहित्य में कवियों ने रामकथा का जो प्रबन्ध ग्रहण किया, उसमें 'रामचरितमानस' ही अधिकांश उपजीव्य बन गया है। तुलसीदास की रामकथा को राजा माण्डा ने अविरल स्वीकार कर लिया है। कथ्य तथा शिल्प योजना में दूसरा आधार कवियों ने वाल्मीकि रामायण को बनाया है। राजा रुद्रप्रताप सिंह ने कई नये प्रसंगों की उद्‌भावना की है।

1 तुलसीदासोत्तर हिन्दी राम साहित्य, डा0 रामलखन पाण्डेय, पृ0 44

'वाल्मीकि रामायण' से 'सुसिद्धान्तोत्तम–रामखण्ड' में रुद्रप्रताप सिंह ने जो कुछ लिया वह उनके संस्कृत पांडित्य का ही कारण था। तुलसीदास के बाद रामकथा के अंगभूत चरितों में हनुमान जी की लोकप्रियता बहुत अधिक बढ़ गयी और उसका कारण हनुमान जी में रामभक्ति की सान्निधि थी। हनुमान जी के चरित का लेखक ने 'रामखण्ड' के 'किष्किन्धाकाण्ड' तथा 'सुन्दरकाण्ड' में अत्यन्त विस्तार से वर्णन किया है।

यह रामकथा एक श्रृंगारिक एवं चमत्कारिक रामकाव्य है। कवि का पाण्डित्य प्रदर्शन, संवाद योजना प्रकृति वर्णन अत्यंत सराहनीय है। लेखक ने इसमें विषय का विस्तार पुराणों के समान किया है। इसी आधार पर इसे हिन्दी का महापुराण भी कहा है। कवि ने विषय के विस्तारीकरण में कहीं भी संकोच नहीं किया है। 'वाल्मीकि रामायण' और 'अध्यात्म रामायण' के अनेक प्रमाण भी दिये हैं। इस प्रकार रामकथा के दो प्रमुख आधार स्तम्भ स्वीकार किए गए हैं– 'वाल्मीकि रामायण' और 'रामचरित मानस'। इस प्रकार लोगों ने सगुण रामकथा को ही स्वीकार किया है।

संरचना विधान (शिल्प) के अन्तर्गत सम्पूर्ण कला पक्ष पर विचार किया जाता है, जैसे–भाषा, रस, छन्द, अलंकार, शैली, संवाद–योजना आदि। इस शिल्प में रामकथा को प्रस्तुत करने का काम ही राजा रुद्रप्रताप सिंह ने किया, यद्यपि उनकी रचना लोकप्रिय नहीं हो सकी है किन्तु उनके महत्व और वस्तु आकलन से इनकार नहीं किया जा सकता।

रामखण्ड रामायण की भाषा के सम्बन्ध में पं0 सुधाकर द्विवेदी जी कहते हैं– ''इस ग्रन्थ में भाषा की रीति के अनुसार मूर्धन्य ष को ख और सर्वत्र दन्ती सकार रखा है, जिन अक्षरों में स्वर ऋ मिला है जैसे अमृत में मृ वहाँ भाषा की चाल से लगा दिया गया है, अर्थात् अमृत को अम्रित लिखा है। दीर्घ स्वर ए, ऐ,

ओ, औ का जहाँ हस्व उच्चारण करने से छंद ठीक होता है वहाँ ए के स्थान में ऍ सुभीते के लिए कर दिया गया है।''[1]

सुसिद्धान्तोत्तम रामखण्ड की भाषा में अनेक प्रयोग मिलते हैं। उन्होंने संज्ञा पदों के पर्यायवाची शब्दों को भी प्रस्तुत किया है–

^^jkou v# ?kVd.k e?kukfu vljkfn dfjA
vkjr Hk lc c.k ihfMr [kx fex /kjklgAA**[2]

यहाँ कवि ने कुम्भकर्ण के लिए घटकर्ण शब्द का प्रयोग किया है।

संस्कृत मिश्रित भाषा के अनेक प्रयोग हैं। एक सोरठा उद्धरणीय है–

f=oyh tjr j?kohj dB pk mnj·fi pA
=; fueXu vfr /khj ikn e/; j[kk lfgrAA**[3]

भाषा शैली की दृष्टि से महाकाव्य उत्तम है। महाकाव्यात्मक शैली की दृष्टि से भी रचना उत्तम है। महाकाव्य की सभी मान्यताएँ पूरी हो गयी हैं। नायकत्व, सर्गबद्धता, प्रकृति चित्रण, स्तुति विधान, आरम्भ और अन्त, अग्रिम सूचना, फलागम की सूचना और सुखान्त व्यवस्था। इसके राम नायक हैं और इसकी प्रसिद्ध रामायणी कथा है। 7 पथों (काण्डों) में इसका विस्तार है।

अलंकारों की एक स्वस्थ परम्परा मध्यकालीन हिन्दी में मिलती है। मूलतः ये काव्य के शोभाकारक धर्म है। रामखण्ड रामायण में अलंकार प्रयोग मर्यादित, सहज और सरल हैं। कतिपय प्रसिद्ध अलंकारों को कवि ने ग्रहण किया है, जैसे–उपमा, अनुप्रास, उत्प्रेक्षा, श्लेष, सांगरूपक, रूपक, यमक, काव्यलिंग, निदर्शना, मालोपमा आदि।

सीता–स्वयंवर और विवाह के प्रसंगों में उपमा, उत्प्रेक्षा और अनुप्रास के

---

1 रामखण्ड रामायण, भूमिका, पृ0 10
2 रामखण्ड रामायण, वंशपथ, सो0 135, पृ0 51
3 रामखण्ड रामायण, दूतपथ, सो0 25, पृ0 141

प्रयोग अधिक है।

अन्य प्रसंगों में भी इसके प्रयोग सराहनीय हैं–

dudcfy tu p< gkykA ejdrfxfj pj eug ejkykAA[1]

यत्र–तत्र आलंकारिक प्रयोग की विसंगतियाँ भी दिखाई पड़ती हैं रामलक्ष्मण की उपमा कृष्ण और बलराम से दी गयी है। कुछ सामान्य उपमायें भी हैं।

कवि का ध्यान अलंकारों की ओर कम गया है, कथा–विस्तार की ओर अधिक गया है। वर्णन और इतिवृत्त में अलंकार कम आ पाते हैं। कवि ने चमत्कार से बचने का सफल प्रयास किया है। इसका अभाव खटकता भी नहीं।

सम्पूर्ण रामखण्ड रामायण की रचना कवि ने दोहा चौपाई ओर सोरठा की शैली पर किया है। रामखण्ड में अन्य प्रकार के छन्द भी कवि द्वारा प्रयोग में लाये गये हैं लेकिन वे विरल हैं। पूरी रचना प्रक्रिया का मुख्य आधार दोहा–चौपाई ही है। बीच–बीच में संस्कृत के श्लोक भी है। 8 चौपाइयों पर एक दोहे का क्रम है। बीच–बीच में सोरठा और छन्द भी हैं। छन्दों की गेयता सराहनीय है। संस्कृत और हिन्दी के छन्द प्रयुक्त हैं। इसमें कवि सफल है। सभी प्रयोग प्रसंगानुसार है। सबसे अधिक चौपाई छन्द का प्रयोग किया है।

अतः हम कह सकते हैं कि कथ्य और शिल्प की दृष्टि से यह महाकाव्य उत्तम है। इसमें कथ्य पर अधिक और शिल्प पर कुछ न्यून ध्यान दिया गया है। भाव, भाषा, छन्द और रस व्यंजना की दृष्टि से यह सम्पन्न है। कवि का श्रम, प्रतिभा, ज्ञान और भक्ति सब कुछ अद्‌भुत है। राम कथा का यह महाकाव्य भारत के साहित्य एवं संस्कृति का एक जीवन्त साहित्यिक एवं सांस्कृतिक दस्तावेज है।

---

1 रामखण्ड रामायण, कोशलपथ, सो0 153, चौ0 4, पृ0 81

¼vi½ प्रासंगिक एवं युगानुकूल कथा

जीवन के मौलिक उपादान और कारणों का समन्वय ही सत्य के समाज सापेक्ष्य चिंतन का आधार होता है। कर्म का मर्म तथा आदर्श का महत्व समझना आचरण में धारण करना जिनके लिए है, उनके लिए 'राम चरित्र' की प्रासंगिकता सदा सर्वदा एक समान है क्योंकि वह समझते हैं कि राम इतिहास नहीं है। वह सदैव ही वर्तमान हैं। आधुनिक जीवन की भी समाज सापेक्ष्य समस्याओं और प्रश्नों का निदान तथा उत्तर राम की लीलाओं में मौजूद हैं। आवश्यकता है, अध्येता की आध्यात्मिक चेतना के विकास की।

भक्ति–ज्ञान और कर्म की त्रिवेणी का अनादिकाल से प्रवाह संस्कृति की अजस्र धारा में होता चला आया है। वेदों में राम उपस्थित हैं, उपनिषदों में राम हैं, पुराण पुरुष भी हैं, लोक कथाओं और लोक मानस में भी राम की निकटता पारिवारिक सदस्य की भाँति जीवन में रस संचार करती रही है। राम की प्रेरणा से दैहिक, दैविक तथा भौतिक तापों से मुक्ति का मार्ग कवि खोजने का प्रयास करता है।

कवि के कथनानुसार राम का नाम, रूप, लीला, धाम सभी कुछ मन–बुद्धि अगोचर एवं अनिर्वचनीय है। जीवन में उनकी परिव्याप्ति जन्म से मृत्यु पर्यन्त चिरन्तन् सत्य के रूप में तो है ही उसके आर–पार भी है। लोक परलोक सर्वत्र उसकी अनुगूँज व्याप्त है। राम की लीलाएं इतनी उदात्त है कि उनमें पूर्ण भगवत्तत्व का तथा अलौकिक श्रेष्ठता का निरन्तर आभास होता रहता है।

राम का शील इतना उत्कृष्ट है कि पक्षी भी उसकी प्रशंसा करते नहीं थकते। अद्वितीय शक्ति सम्पन्न होने पर भी क्षमाशीलता, परम औदार्य, कारुण्य और शरणागत वत्सलता उनके व्यक्तित्व के अंग है। कवि ने राम की मर्यादा

भक्ति को आदर्श और आचरण की पवित्रता से मण्डित रखते हुए जन साधारण के लिए लिखा। यहाँ कवि रुद्रप्रताप की भक्ति–भावना, कबीर आदि निर्गुण भक्तों की ज्ञान योगमयी भावना की भाँति रहस्यमयी नहीं है। कवि रुद्रप्रताप सिंह वाल्मीकि रामायण का भावानुवाद करने के बावजूद रामायण की कथा को ठीक उसी रूप में नहीं बांधता जैसा कि उसका मौलिक रूप रहा है। कहीं वह वाल्मीकि की रामकथा को सीधे स्वीकार कर लेता है कहीं उसे तोड़ता–मरोड़ता है और कहीं प्रासंगिक कथाओं का पिष्ट–पेषण करता है।

कवि रुद्रप्रताप रामकथा में प्रासंगिक कथाओं का प्रयोग अपनी विद्वता के प्रदर्शन के लिए करते हैं। 'सुसिद्धान्तोत्तम रामखण्ड रामायण में कवि प्रत्येक पथ में मूलकथा के मध्य प्रासंगिक कथा का संयोजन करता है। इन प्रासंगिक कथाओं के स्रोत या तो पुराण–कथाएँ रही हैं अथवा उदन्त वार्ताओं के आधार पर नयी कथा की सृष्टि की गयी है। रामखण्ड रामायण में मुख्य कथा के समान्तर घटित प्रासंगिक कथा का प्रमुख आधार यही रहा है।

रुद्र प्रताप सिंह ने वंश पथ में श्वेत–दीप वर्णन एवं सरयू–जन्म की नूतन कल्पना की है। वंश पथ में श्वेत द्वीप का वर्णन वह विशेष रूप से करते हैं। नूतन कथा–परिकल्पना होने के कारण वंशपथ में यह प्रासंगिक कथा अपना विशिष्ट स्थान रखती है। श्वेत–द्वीप भगवान विष्णु (राम) का निवास स्थान है जो शाश्वत है, 32 लाख योजन में फैला श्वेत द्वीप परितः समुद्र से घिरा है।

अब प्रश्न उठता है यह कथा कवि किस आधार पर कल्पित करता है और फिर राम कथा के साथ उसका संतुलन कैसे स्थापित करता है। श्वेत द्वीप का प्रसंग महाभारत के शान्तिपर्व के 335वें अध्याय में वर्णित है।[1] मध्यभारत में वर्णित इस कथा के अनुसार श्वेत द्वीप नारायण (विष्णु) के रहने का एक दिव्य स्थान

1 महाभारत पंचम खण्ड, (शान्तिपर्व), गीता प्रेस गोरखपुर, अध्याय 335/8–12

है। श्वेत द्वीप का गुण धर्म यह है कि उस द्वीप के निवासियों का वर्ण अर्थात् रंग उज्ज्वल होता है। इतना ही नहीं वहाँ के निवासियों का रहन–सहन भी स्थूल जगत से भिन्न है। श्वेत द्वीप के लोग भोजन–पानी पर नियंत्रण रखने में समर्थ हैं। वे भूख प्यास के कहीं ऊपर उठ चुके हैं और अपार शक्ति एवं सामर्थ्य से सम्पन्न है। तात्पर्य यह कि वंश पथ और महाभारत की यह कथा हू–ब–हू मिलती है और यह निश्चित है कि कवि रुद्रप्रताप ने रामखण्ड में इसका प्रयोग कुशलतापूर्वक किया है।

इस प्रासंगिक कथा को कवि बहुत विस्तार के साथ लिखता हैं वह श्वेत द्वीप की कथा ही नहीं लिखता बल्कि वहाँ के वृक्ष, वृक्ष की शाखा, वृक्ष के पत्ते, कितने विश्वा और कितने योजन के हैं। इसकी भी जानकारी देता चलता है। कवि श्वेत द्वीप की नर्तकियों के बारे में लिखता है वे नृत्यगान में पारंगत युवतियाँ हैं और उनका धर्म है नृत्यगान करके भगवान राम का मनोरंजन करना और प्रभु कों प्रसन्न रखने के लिए कवि प्रकृति को किस तरह तैयार करता है–

fid lkfjdk dkfdyk ukukA djfg e/kj j o gfj vLFkkukAA

Qly bnhcj cgjxkA d# xtkj fcfc/k fcf/k fHkxkAA
ljrV fcjfpr efnj lkukA ukuk Hkkfr Hkkfr nkykukAA
vfrfcfp= ufg cjfu fljkbiA lgl l/kjek lHkk ytkbiAA
cBi rg Hkkxor i/kkukA ,d&,d e/kok L=hekukAA
rkjkifr cnuh cg ckykA lft Hk[ku dly lfclkykAA
fuR;xku dfj gfjfg fj>kofgA vfr vyH; nC;fg fur ikofgAA

LojeNuk xke v# rkykA txfrfg xku djfg

l|jcykAA[1]

श्वेत द्वीप में कवि अमृत के लिए समुद्र–मंथन और देवासर संग्राम का संदर्भ भी प्रस्तुत करता है–

> nokl|j lxke ek| no ijkt; nf[kA
> nhUg e/kk l|: x|:fg tkfu vej volf[kAA
> eFku fl/k| nokl|j ykxA /kfj enjfg i"B vujkxAA
> u cl jlr lc rygh lkbA egkl|y /kkju dfj tkbAA[2]

वंशपथ में श्वेत–द्वीप वर्णन के साथ ही कवि सरयू–जन्म की नूतन कथा की कल्पना करता है जो मनु–पुत्र इक्ष्वाकु के प्रयत्न से हिमालय पर्वत से निकली। सरयू जन्म का यह प्रसंग रुद्रप्रताप के पूर्व किसी भी रामकथा में उपलब्ध नहीं होता। इस प्रकार हम देखते हैं कि कवि एक नयी कथा–सृष्टि करता है।

कोशलापथ में प्रासंगिक कथाओं का विन्यास मुख्य रूप से तीन जगहों पर किया गया है। गौण रूप में कुछ ऐसे भी प्रसंग आये हैं जो वाल्मीकि रामायण से इतर हैं, और इनकी विशेषता यह है कि पात्र तो रामकथा के ही हैं लेकिन घटना किसी अन्य ग्रन्थ की अथवा कवि द्वारा कल्पित है। ये तीन प्रमुख प्रासंगिक कथाएं– (1) राम कवच वर्णन (2) जयन्त प्रसंग और (3) मूलकथा के साथ कवि द्वारा प्रस्तुत निज वंश एवं नगर वर्णन हैं।

राम कवच वर्णन कवि की कल्पना की उपज है। राम कवच वर्णन के संदर्भ में वह उल्लेख करता है कि सीता राम के साथ वन जाने को उद्यत है ओर राम उन्हें रूक जाने के लिए कहते हैं। यह प्रसंग तो वाल्मीकि रामायण में

---

1 रामखण्ड रामायण, वंशपथ, छंद 16, चौ0 1–8, पृ0 30

2 रामखण्ड रामायण, वंशपथ, दो0 98, 99, चौ0 1–2, पृ0 34

भी है लेकिन वाल्मीकि रामकवच का संयोजन कहीं भी नहीं करते। रुद्रप्रताप सीता द्वारा 'राम कवच तंत्र' की व्याख्या इस प्रकार कराते हैं–

oU; tho tgok yfx Hkk[kA jPNfg l l vkfg u dfj ek[kA
dgfjvkfn fexkleinkbA ikr ekfg ujgfj j?kjkbAA
vVch jPNr e ckjkgA ckfj ikr >[kru mRlkgAA
d)j jPNr d/kj/kkjhA ju jPNfg ik.MofgrdkjhAA
l==kl r ikr e cfyfo/oludkfjA
jPN nkinh jPN ekfg fi; lnk lgukfjAA[1]

ikr tykl; e tylk;hA fxg jPNfg lru JhnkAA
;g cãk.M vudu tkbA xnkikfu rEg ikyg lkbAA
ee jPNu lno djrkjA ik[kd fcLo txr HkjrkjAA
dpd jkee= ,fg lkgA fcLokfe= fj[k; tg tkgAA
Nn vu"Vi jk?konokA lhrk nfc cht tfg lokAA[2]

यह कवच तंत्र का सैद्धान्तिक पक्ष है। इसी क्रम में कवि कवच तंत्र के प्रयोग का विवरण प्रस्तुत करता है जिससे कवि के तंत्र–मंत्र ज्ञान की अच्छी जानकारी हमें प्राप्त होती है।

जयन्त प्रसंग भी रुद्रप्रताप की ऐसी कल्पना है जो, 'वाल्मीकि रामायण' में नहीं है। जयन्त की कथा गोस्वामी तुलसीदास के 'रामचरितमानस' में है। दोनों में अन्तर यह है कि रामचरितमानस में यह कथा अरण्यकाण्ड में है और रुद्रप्रताप ने इसे अयोध्याकाण्ड (कोशलपथ) में संयोजित किया है। कथा यह है कि सीता के सुन्दर रूप से आकृष्ट जयन्त– जो कि इन्द्र का पुत्र है– सीता के साथ दुर्व्यवहार करता है और अन्ततः उसे राम के हाथों दण्ड की प्राप्ति होती है। वह

---

1 रामखण्ड रामायण, कोशलापथ, दो0 163, चौ0 5–8, पृ0 88
2 रामखण्ड रामायण, कोशलापथ, दो0 167, चौ0 1–5, पृ0 89

अपनी एक आंख खो बैठता है।

कवि रुद्र प्रताप जयन्त कथा अन्य रामचरित ग्रन्थों से ग्रहण करते हैं। 'रामचरितमानस' से पूर्व ही इस कथा की कल्पना कर ली गयी होगी। कवि ने तुलसी पूर्व अथवा पश्चात् ग्रन्थों से इस कथा का आधार प्राप्त किया होगा। अब चूँकि यह कथा वाल्मीकि रामायण में अप्राप्य हैं इसलिए यह प्रासंगिक कथा की परिधि में आती है क्योंकि कवि तो समग्रतः वाल्मीकि रामायण का हिन्दी संस्करण कर रहा है।

अटवी पथ में प्रासंगिक कथा के रूप में कवि भक्ति और वेदान्त का निरूपण करने का प्रयास करता है। भक्ति और वेदान्त के इस दर्शन पर वैष्णव भक्ति का प्रभाव अधिक है। कवि यहाँ भी वैष्णव धर्म के मोह में पड़ता है क्योंकि वह स्वयं वैष्णव धर्मी हैं।

अपना भक्ति और ज्ञान से समन्वित दर्शन कवि अपने स्तर पर अभिव्यक्त नहीं करता बल्कि सम्पूर्ण दर्शन श्री राम के मुख से उद्भूत होता है। कदाचित् कवि अपने ज्ञान एवं अपनी भक्ति को और अधिक प्रामाणिक बनाने के लिए ऐसा करता है। ज्ञान–भक्ति से युक्त यह प्रासंगिक कथा मुख्य कथा धारा को अतिरिक्त विशेषताओं के साथ आगे बढ़ाने का कार्य करती है।

आयुर्वेद प्रसंग के अतिशय विस्तार के कारण यदि किष्किंधापथ रामखण्ड का विशालतम पथ है तो प्रासंगिक कथाओं की अत्याधिक प्रासंगिकता के कारण भी किष्किंधापथ का महत्व कुछ और बढ़ गया है। किष्किंधापथ में प्रासंगिक कथाओं की भरमार है। किष्किंधापथ में प्रमुख प्रासंगिक कथाएं निम्नलिखित हैं–

शास्त्रीय चर्चा के प्रसंग, भृगु पुराण का प्रसंग, कल्कि प्रसंग, बुद्ध चरित्र, जप, यज्ञ विधि, आयुर्वेद प्रसंग, रामकथा के प्रसंग आदि।

शास्त्रीय चर्चा के अन्तर्गत कवि प्रायः उन्हीं प्रसंगों की विस्तार से चर्चा करता है जो उसने या तो गुरु–परंपरा से ग्रहण की है अथवा जिसका ज्ञान उसे संस्कार रूप में मिला है। पूजापाठ, तर्पण, व्रत, यज्ञ, आसन, प्राणायाम, ब्रह्म विद्या, मोक्ष, सत्यनारायण व्रत कथा, सन्ध्या, अष्टयाम पूजा, तीर्थ माहात्म्य, भक्ति एवं सांख्य योग, अवतार वर्णन, मलमास और एकादशी आदि व्रतों एवं पूजा पाठादि का वर्णन इत्यादि अनेक प्रसंग शास्त्रीय चर्चा में देखे जा सकते हैं। इन प्रासंगिक कथाओं की चर्चा का प्रयोजन क्या रहा होगा? इसके उत्तर में हम कह सकते हैं कि अपने ज्ञान का प्रदर्शन तो कवि करता ही है साथ ही इन्हीं चर्चाओं के द्वारा कवि सीता के वियोग में दुःखी राम की वेदना का परिहार कराने का प्रयत्न भी करता है। ये प्रासंगिक कथाएं किष्किंधापथ में मूलकथा के साथ रच–खप जाती हैं, अतः ऐसा नहीं लगता कि इन कथाओं का आधार मूलकथा से अलग है। कारण यह है कि यह प्रासंगिक कथा राम लक्ष्मण संवाद, शिव पार्वती संवाद एवं अगत्स्य सुतीक्ष्ण संवाद के माध्यम से कही गयी हैं।

किष्किंधापथ के पूर्वार्द्ध में कवि ने तंत्र–मंत्र एवं चमत्कार से युक्त प्रसिद्ध पुराण ग्रन्थ भृगुपुराण का उल्लेख किया है। इसके अन्तर्गत कवि छिन्नमस्तिका आदि देवियों का परिचय देता है। इन देवियों का स्वरूप तांत्रिक है। ये देवियाँ तांत्रिक देवियाँ हैं। अतः इनकी सिद्धि प्राप्त करने पर इनका स्वभाव प्रचण्ड एवं उग्र हो उठता है–

> [klm lhl /kj r rfjr nlfc|Ug ek y[kA
> egkmx noh Hkb fNUuefLrdk c[kAA[1]

'भृगु–पुराण' की कथा लिखने का तातपर्य ही है कि कवि ने इस तांत्रिक ग्रन्थ का अध्ययन किया है और कवि का लगाव तंत्र–मंत्र से इतना अधिक है कि

1 रामखण्ड रामायण, किष्किंधाकाण्ड पूर्वार्ध, दो0 1147, पृ0 524

वह अकारण और अनावश्यक रूप से इस प्रसंग को रामकथा के मध्य स्थापित करने की कोशिश करता है।

किष्किंधापथ में कवि ने कल्कि के अवतार का प्रसंग भी उपस्थित किया है। इसके पीछे एक कारण है भाषा ग्रन्थों (अर्थात् हिन्दी के किसी ग्रन्थ) में इस प्रसंग को नहीं लिया गया है। कवि पहली बार हिन्दी के किसी महाकाव्य (रामखण्ड) में इसका वर्णन करने का संकल्प लेता है।

कल्कि का कथा प्रसंग कवि कल्कि पुराण से ग्रहण करता है लेकिन कुछ फेर बदल के साथ। कल्किपुराण में लिखा है कि सम्भलपुर उड़ीसा में है और भगवान कल्कि वहाँ से नर्मदा नदी होते हुए माहिष्मती आते हैं और यवनों का सर्वनाश करते हैं। कवि रुद्रप्रताप सिंह लिखते हैं कि सम्भलपुर गंगा नदी के किनारे था। कल्कि–पुराण और कवि–कल्पना के बीच बड़ा विरोधाभास है। जिससे भूगोल का निर्णय नहीं हो पाता। कवि कदाचित् संभलपुर को गंगा के किनारे स्थापित होने की कल्पना इसलिए करता है कि गंगा इस देश की पावन नदी है।

कल्कि–पुराण में जो कथा है उसके अनुसार कल्कि भगवान का पाणिग्रहण राजकुमारी पद्मावती के साथ हुआ था। पद्मावती सिंघल द्वीप की राजकुमारी थी और बहुत सुन्दरी थी। उसके रूप–सौन्दर्य के बारे में सम्भलपुर में चर्चा होती है। उसके सौन्दर्य का गुणगान एक शुक के द्वारा होता है। भगवान कल्कि राजकुमारी पद्मावती की सुन्दरता के बारे में सुनकर उसे प्राप्त करने के लिए उद्यत होते हैं–

rfg volj ,d dhj lkgk,mA icfg lk lidj cj ik,mAA

frUg fl?ky dh dFkk lqukbA ije ir fcgncr jkbAA

inekorh l|rk Hkb fcgcr uke uj!lA
lhyorh tlorh vfr i|U;orh lHk clAA[1]

प्रासंगिक कथा की दृष्टि से किष्किंधापथ का आयुर्वेद प्रसंग सबसे लम्बा है। इस प्रकार प्रासंगिक कथा–विन्यास की दृष्टि से रामखण्ड का किष्किंधापथ की अन्य प्रासंगिक कथाएँ पथ–विस्तार में अतिरिक्त सहयोग करती हैं।

प्रासंगिक कथा दूत पथ में अत्यंत संक्षिप्त है। मात्र एक ही प्रसंग है जो नूतन है। यह प्रसंग है रावण की सभा में हनुमान द्वारा राम–प्रताप–वर्णन। राम–भक्त हनुमान रावण की सभा में भगवान राम के प्रताप का वर्णन करते हैं। कवि लिखता है–

,fg fclke l|jke dk nr Locy cg| xkbA
tFkkrF; j?kclefu cjum ckujjkbAA
djm| dkg j?kchj i!l!lkA lin pjkpj dk vor!lkAA
jkenkl dj eb| vupkjhA pkgm| rm fgekfn dj /kkjhAA
lØ ijkxe l|j x/kckA tPN jPN Hkbjo xu lckAA
d[kekM xáad crkykA r|j;cnu filkp vfgekykAA
lkHk dtjUg lgl|iuxuA lg nbR; nkuo fud[kkReuAA
lfgr iU;tu ujfex t!rA e t|f/k vjg u fuf/k lfj r!rAA
fdUuj fd!i#[kk f=[k ykdA eb| u jgm| dkg d jkdAA
jkenkl vupj db djuhA dk l|d f=[k ykdi cy cjuhAA
fcLu| vu!r vu!r fcf/k #n vu!r fclkyA
l!l fcfc/k vyd!l cg| l!n c#u t|xHkkyAA
ckr g|rklu leu cg| jkoukfn vl|j!lA
thfr u ld| rfg t|) efg jke Hkku| vo/klAA[1]

1 रामखण्ड रामायण, किष्किंधाकाण्ड उत्तरार्ध द्वितीय खण्ड, दो0 2401, चौ0 7–8, पृ0 1097

हनुमान द्वारा रावण की सभा में राम–प्रताप–वर्णन की यह कथा वाल्मीकि रामायण में नहीं है। कवि राम–भक्त हैं, अतः हनुमान के बहाने अप्रत्यक्ष रूप से वही राम वर्णन करता हैं। हनुमान तो निमित्त मात्र हैं।

इस प्रकार पूरे रामखण्ड में दूतपथ प्रासंगिक कथा की दृष्टि से सबसे कम प्रभावित हुआ है। राम–प्रताप वर्णन को छोड़कर यदि देखें तो कवि सर्वत्र मूल कथा का ही प्रतिपादन करता है। राम–प्रताप वर्णन उसके मस्तिष्क की उपज है।

युद्ध पथ और राजपथ में भी कुछ प्रासंगिक कथाओं की सृष्टि की गयी है। युद्ध पथ में कवि यदि मूलकथा–धारा के बीच अपने राजवंश और माण्डा नगरी का वर्णन करता है तो राजपथ में मुख्य कथा–प्रवाह के मध्य रामराज्य की कुछ आकर्षक झांकियां एवं इतिहास और उदन्त वार्ताओं पर आधारित नयी कथाएं भी प्रस्तुत करता है। जिस प्रकार किष्किंधापथ में आयुर्वेद प्रकरण मूल कथा के आकार को बढ़ाता है ठीक उसी तरह राजपथ में वर्णित इतिहास और राजवंशों का वर्णन भी उसके आकार को अभिवृद्ध करता है। राजवंशों का इतिहास एकदम अलग प्रतीत होता है। ऐसा लगता है कि रामकथा में इतिहास–कथा को जोड़ दिया गया है।

प्रासंगिक कथाओं की इस स्थिति को देखकर एक कुतूहल मन में उठता है कि यदि कवि ने 'वाल्मीकि रामायण' पर आधारित मूल कथा का ही गान किया होता तो 'रामखण्ड रामायण' का स्वरूप कैसा रहता। गोस्वामी जी ने लगभग वाल्मीकि की रामकथा का अनुसरण करके विश्व–ख्याति अर्जित की। यह दुर्भाग्य है कि हिन्दी साहित्य के इतिहासकारों ने उसकी रचना को अनदेखा किया अन्यथा हिन्दी में आज तक इतना विशाल और स्तरीय महाकाव्य लिखा ही नहीं गया। यह हिन्दी साहित्य का एक दुर्लभ ग्रन्थ है। रामचरित प्रतिपादन के लिए

---

1 रामखण्ड रामायण, दूतपथ, दो0 418–420, चौ0 1–8, पृ0 216

इसका अपना महत्व है।

¼vii½ *एक हजार वर्षों का दस्तावेज*

सुसिद्धान्तोत्तम रामखण्ड रामायण का अन्तिम पथ राजपथ (उत्तरकाण्ड) सम्पूर्ण रामखण्ड रामायण का प्राण है। कथा–प्रबन्ध की दृष्टि से इसका बहुत महत्व है। इतिहास के एक हजार वर्षों के दस्तावेज को कवि राजपथ में उद्घाटित करता है। हिन्दू राजाओं की वंशावली का ब्यौरा और काशीराज वंश का वर्णन, चन्द्रवंशी जयचन्द्र का वर्णन, पृथ्वीराज से लड़ाई का वर्णन, दिवोदास वंश का वर्णन, युधिष्ठिर से विक्रमादित्य राजवर्णन, मुसलमान बादशाहों का राज्यवर्णन और अंग्रेजी नीति की प्रशंसा और अन्त में कवि ने अपने वंश का वर्णन किया है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि राजपथ में प्राचीन, मध्य एवं आधुनिक तीनों काल के इतिहासों पर कवि रुद्र प्रकाश ने प्रकाश डाला है।

राजपथ में कवि रुद्रप्रताप ने इतिहास को अपनी दृष्टि से देखने का प्रयत्न किया और उसे काव्य में संतुलित और संयोजित करके प्रस्तुत किया, इसलिए यह आवश्यक हो जाता है कि कवि की इतिहास दृष्टि और इतिहास बोध की पूरी जानकारी की जाये। रामखण्ड में इतिहास का यही प्रबल पक्ष उसकी अलग पहचान बनाता है और राजपथ को एक विशिष्ट पथ बनाता है।

यों तो कवि प्रायः प्रत्येक सर्ग में अपने वंश का इतिहास प्रकाशित करता है लेकिन राजपथ में वह अपने वंश के इतिहास के साथ भारतीय इतिहास को जिस ढंग से प्रस्तुत करने का प्रयत्न करता है–ऐसी कठिन साधना विरले कवि और रचनाकार ही कर सकते हैं।

राजपथ में कवि भारत के इतिहास को गहरी समझ के साथ प्रस्स्तुत करता है। भारत का इतिहास तो अटवीपथ और कोशलपथ में ही आरम्भ हो

जाता है। राजपथ के 51वें विश्राम में कवि पमार (परमार) वंश के राजाओं का इतिहास लिपिबद्ध करता है। उज्जैन नरेश राजा विक्रमाजीत (विक्रमादित्य) के वंश का वर्णन भी वह करता है–

Hki fcØekthr dk l tud pfjr yykeA
/kkjkij mTt;u yk cjum ,fg fclkeAA[1]

इसी कुल में राजा गंधर्व सेन हुए, जो कामुक प्रवृत्ति का था और जिसने आखेट करते हुए जंगल में वेश्यागमन किया। इसी प्रवृत्ति के कारण दिनो–दिन राजा क्षीण पड़ता गया और अतिसार का शिकार हो गया। इसके पश्चात् इस कुल का यशस्वी राजा विक्रमादित्य राजसिंहासन का स्वामी बना। कवि रुद्रप्रताप इसी राजा के लिए चरित वर्णन करते हैं–

br x/kolu cl dkykA vrhlkj dfj fer efgikykA
iu mnHko Hk, fcØe HkkuA tfg d fgr ;g pfjr c[kkuAA[2]

यह राजा सांख्य, न्याय और धर्म का ज्ञाता था। रुद्रप्रताप के शब्दों में कहें तो वह प्रत्यक्ष सांख्य, न्याय और धर्म (ही) था–

/kujklj lfr cnu lk vPNkA
lk[; U;k; v# /ke irPNkAA[3]

राजपथ के 52वें विश्राम में कवि दिल्ली नरेश पृथ्वीराज चौहान का वर्णन करता है। कवि पृथ्वीराज चौहान के बारे में कहता है कि उनकी कीर्ति का क्या

---

1 रामखण्ड रामायण, राजपथ, दो0 880
2 रामखण्ड रामायण, राजपथ,, दो0 886, चौ0 4–6
3 रामखण्ड रामायण, राजपथ, दो0 886, चौ0 8

गुणगान करूँ, जिसकी कीर्ति सारा संसार जानता है–

iUng c[k jgh /kjk fccl nio pkgkuA
frudh dhjfr dk dgm tkur ldy tgkuAA[1]

मुहम्मदगोरी (सहाबुद्दीन) ने पृथ्वीराज चौहान को पराजित करके दिल्ली का सिंहासन हथिया लिया था। उसने 15 वर्ष तक दिल्ली पर शासन किया–

lgkcnnhu Hkiky iPNcj[kkfu efnuhA
iky;kekl mHk;k yky;u ltuku Hko%AA[2]

जयचन्द पृथ्वीराज की मौसी के लड़के, ये राठौर क्षत्रिय थे। इन्हीं के बेटी के स्वयंवर में इनसे और पृथ्वीराज से झगड़ा खड़ा हुआ। इन्हीं ने शहाबुद्दीन गौरी को पृथ्वीराज से लड़ने के लिए अफगान से बुलाया था।[3]

थानेश्वर के पास गोरी और पृथ्वीराज से सन् 1191 ई0 में बड़ी भारी लड़ाई हुई। पहली बार तो पृथ्वीराज की जीत हुई पर दूसरी बार सन् 1193 में गौरी बड़ी भारी फौज लेकर पृथ्वीराज से लड़ा। पृथ्वीराज मारे गये। पीछे से यही गौरी दूसरे साल सं0 1194 ई0 में दुआबे में, जो कि आजकल इटावे में फिरोजाबाद कहा जाता है, जयचन्द से भी लड़ा और उनको मार कर सारे हिन्दुस्तान का सुल्तान हुआ।[4]

इसके बाद मुगल बादशाहों ने ही दिल्ली पर लम्बे समय तक राज किया। राजपथ के 53वें विश्राम में राजा रुद्रप्रताप इन शासकों की लम्बी सूची तथा शासनकाल प्रस्तुत करते हैं।

कुतुबुद्दीन ने चार वर्ष शासन किया–

---

1 रामखण्ड रामायण, राजपथ, दोह 928, पृ0 445
2 रामखण्ड रामायण, श्लोक 373, पृ0 445
3 रामखण्ड रामायण, उत्तरकाण्ड (राजपथ) की भूमिका, पृ0 3
4 रामखण्ड रामायण, उत्तरकाण्ड (राजपथ) की भूमिका, पृ0 3–4

drcnnhu nkl rfg djA pkfj c[k l[k dhUg ?kujAA[1]

मुबारकशाह तेरह वर्ष शासन करता है–

cgfj eckjd lkg ujslA rjg c[k iky lkb nslAA[2]

मुबारकशाह के पुत्र शाहमुहम्मद ने ग्यारह (11) वर्ष तक शासन किया–

rklr lkg egEen gkbA c[k ,dnl HkfHkr lkbAA[3]

बहलोल लोदी का शासनकाल अड़तीस (38) वर्ष था–

rklq Hkx Hko fcfnr tgkuA fui cgyky txr lqyrkuAA
HkkX;kr Hk,m Hki fNfr djA ufg vfnLV Qy fnLVu gjAA
vMfrl c[k ekl ifu nkbA jgh /kjk rkd cl gkbAA[4]

बहलोल लोदी के पुत्र सिकन्दरशाह ने छब्बीस (26) वर्ष राज किया–

rk lr lkg fldUnj HkktA NfCcl c[k lHkklu jktAA[5]

कवि के कथनानुसार हुमायूँ ने तेरह (13) वर्ष तक शासन किया–

ifu cl efg Hkb chj gekÅA vklen Hkfj tkdj ukÅAA
rjg c[k lefnfu dkyA lg vQxk vkrhl fclkyAA[6]

हुमायूँ के पुत्र अकबर ने इक्यावन (51) वर्ष तक सुशासन चलाया–

rk lr fcfnr ykd =; ekghA tfg iVrj fgnifr ukghAA
/keoku e=h lfp lokA :i eukgj ekugu nokAA
c[k ,D;kou ekl }; vd fnol ijtrA

1 रामखण्ड रामायण, राजपथ, दो0 933, चौ0 1, पृ0 445
2 रामखण्ड रामायण, उत्तरकाण्ड दो0 937, चौ0 2, पृ0 448
3 रामखण्ड रामायण, राजपथ (उत्तरकाण्ड) दो0 937, चौ0 4, पृ0 448
4 रामखण्ड रामायण, राजपथ (उत्तरकाण्ड), दो0 938, चौ0 3–5, पृ0 448–449
5 रामखण्ड रामायण, राजपथ (उत्तरकाण्ड),, दो0 938, चौ0 6, पृ0 449
6 रामखण्ड रामायण, राजपथ (उत्तरकाण्ड),, दो0 943, चौ0 5–6, पृ0 451

lrtjx pky pyk,Å gk; fgn ujdrAA[1]

कवि सुल्तान जहाँगीर की ऐतिहासिक जानकारी देते हुए लिखता है–

tgkxhj lyrku chj lkgc djku ifrA
ikym gn fgnvku vkpju nbch xfrA
lcRlj ckbl yl blku lfjl fNfrA[2]

जहाँगीर ने बाईस (22) वर्ष राज किया।

मुगल वंश में ही औरंगजेब हुआ जो अति महत्वाकांक्षी तथा कट्टर हिन्दू–विरोधी था। जिसने हिन्दुओं पर पुनः जजियाकर लगा दिया था। कवि उसकी भी प्रशंसा करता है। कवि ने उसकी शक्ति और साहस मात्र से प्रभावित होकर ये काव्य पंक्तियाँ लिखी हैं न कि उसकी कट्टरपंथी आदतों से प्रभावित होकर–

vmjx tc egkcyhA ckou lfjl fNfr ftr NyhAA
nfPNu lk ijc mRrjkA if'pe txr t; cl djkAA
ckou cjl lgekl nk;A fnu chl cl lyrku gk;AA
ufg Hk; ic ujl vlA e?kk lexk tkl clAA[3]

कवि के कथनानुसार औरंगजेब ने 52 वर्ष 2 महीने 20 दिन शासन किया।

औरंगजेब का पुत्र अन्तिम मुगल बादशाह बहादुरशाह जफर था–

rk lr Hkhe cgknj lkgA iLinr fund tfg ckgAA[4]

अब तक भारत में अंग्रेजों ने अपना कुचक्र चलाना शुरू कर दिया था। इसी बीच नादिरशाह ने भी भारत पर आक्रमण किया और अमूल्य धन सम्पदा को खूब लूटा–

---

1 रामखण्ड रामायण, राजपथ (उत्तरकाण्ड),, दो0 943, चौ0 7–8, पृ0 451
2 रामखण्ड रामायण, राजपथ, छंद 379/1–3 पृ0 451–452
3 रामखण्ड रामायण, राजपथ, छंद 380/1–4, पृ0 452
4 रामखण्ड रामायण, राजपथ, सोरठा, 143/2, पृ0 452

x, dky dN ukfnjlkgkA dk i leu dj ckyk tkgkAA
fgn /oLr dfj /ku cg yhUgkA cgfj i;ku tou iFk
dhUgkAA
nfM fgnifr dg cVikjkA bLojfØr lc vy[k vikjkAA[1]

नादिरशाह के भारत पर आक्रमण के साथ ही अंग्रेजों ने भी अपना हाथ–पाँव मारना आरम्भ कर दिया।

यही मराठों के पराभव का भी समय था। 1820 में में ब्रिटिश सत्ता के अधीन हो गए और अंग्रेजों के आगे अपनी शक्ति खो बैठे। परिणामस्वरूप अंग्रजों का आधिपत्य समूचे उत्तर भारत में कायम हो गया। कवि अंग्रेजों के प्रभुत्व तथा मराठों के पराभव का उल्लेख करता है।

dkMk uxj ejgBu dhUgkA lg lyVhu jkt yoyhUgkA[2]
xM fccl gb efnuh vklryt fuf/k rhjA
jkeLoj u;iky yk ,db pØ l/khjAA[3]

इस प्रकार कवि मुगलवंश का पतन और अंग्रेंजों के एकछत्र राज्य का कवि वर्णन करता है। अंग्रेजी राज्य का वर्णन कवि पूरी निष्ठा और तन्मयता से करता है। कवि अंग्रेजों की प्रशंसा में लिखता है–

bfe xMu dh jkt gfy u ldb tg pDdobA
lu =Lr ufg ykt lx pjfg fdD;ku fexAA

,rk fui cyor Hkkx dhUg ;g efnuhA
vk tf/k fØLukdr lg xMu Hkkifr HkuAA[4]

कवि के पिता ऐश्वर्य सिंह की सहायता से अंग्रेजों ने प्रयाग में अपना

---

1 रामखण्ड रामायण, राजपथ, दो0 946, चौ0 6–8, पृ0 453
2 रामखण्ड रामायण, राजपथ, दो0 948, चौ0 4, पृ0 454
3 रामखण्ड रामायण, राजपथ,, दो0 949, पृ0 454
4 रामखण्ड रामायण, राजपथ, सोरठा 145–146, पृ0 456

अधिकार स्थिर किया। ''ब्रिटिश गवर्नमेंट ने भी इस बदले में सर्वदा के लिए माँडाराज को अचल कर अभय प्रदान किया।''[1] कवि अंग्रेजी राज की प्रशंसा अनायास ही नहीं करता। अन्यथा जिस अंग्रेजी शासन व्यवस्था से देश गुलामी के दिन काट रहा था, उन अंग्रेजों की प्रशंसा का क्या औचित्य है।

अन्त में कवि निजवंश वर्णन करता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि रामखण्ड रामायण के माध्यम से इतिहास के एक हजार वर्षों के कई दस्तावेजों की जानकारी हमें प्राप्त होती है।

1 रामखण्ड रामायण, राजपथ (उत्तरकाण्ड) की भूमिका पृ0 4